चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र

अपढ अध्यापिका !

चन्दामामा
विषय सूची

इनके अलावा, मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर रंगीले चित्र, और भी अनेक प्रकार की विशेषताएँ हैं।

चन्दामामा कार्यालय

पोस्ट बाक्स नं० १६८६

मद्रास–१

लेखकों के लिए

एक सूचना

★

चन्दामामा में बच्चों की कहानियाँ, लेख, कविताएँ वगैरह प्रकाशित होती हैं। सभी रचनाएँ बच्चों के लायक सरल भाषा में होनी चाहिए। सुन्दर और मौलिक कहानियों को प्रधानता दी जाएगी। अगर कोई अपनी अमुद्रित रचनाएँ वापस मँगाना चाहें तो उन्हें अपने लेख के साथ पूरा पता लिखा हुआ लिफ़ाफ़ा स्टांप लगा कर भेजना होगा। नहीं तो किसी हालत में लेख लौटाए नहीं जा सकते। पत्र-व्यवहार करने से कोई लाभ न होगा। अनावश्यक पत्र-व्यवहार करने से समय की क्षति होती है और हमारे आवश्यक कार्य-कलाप में बाधा पहुँचती है। कुछ लोग रचनाएँ भेज कर तुरंत पत्रों पर पत्र लिखने लगते हैं। उतावली करने से कोई फ़ायदा नहीं। आशा है, हमारे लेखक इन बातों को ध्यान में रख कर हमारी सहायता करेंगे।

★

–: कार्यालय :–

३७ आचारप्पन स्ट्रीट, मद्रास—१.

हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक, कवि और 'भाग्य-चक्र'
'सिकन्दर' आदि चलन-चित्रों के कहानी-लेखक

पं० सुदर्शन

चन्दामामा के बारे में कहते हैं—

"चन्दामामा के तीन अंक मैंने देखे और पहले मेरी आँख ने और इसके बाद मेरे दिमाग़ ने इन्हें पसन्द किया। हिन्दी में बच्चों के लिए ऐसी पत्रिकाओं की बहुत ज़रूरत है, और मुझे इस बात की खुशी है, कि यह पत्रिका दक्खिनी हिन्द से निकली है, और उत्तरी हिन्द के अच्छे से अच्छे बाल-पत्रों से अच्छी है। भगवान इसे लम्बी उम्र दें, और इसकी आवाज़ दूर दूर तक जाए।"

सुदर्शन

७-११-४९

वर्ष २ | अङ्क ४

संचालक : चक्रपाणी

१-दिसम्बर १९५२

प्यारे बच्चो ! तुम हर महीने चन्दामामा पढ़ते हो। रसीली कविताओं और रोचक कहानियों का मजा लूटते हो। रङ्ग-बिरङ्गी तस्वीरें देख कर मन बहलाते हो। तुम्हारी चिट्ठियों से भी पता चलता है कि चन्दामामा तुम्हें खूब पसन्द आया। पसन्द क्यों न आए? चन्दामामा तुम्हारा है और तुम चन्दामामा के हो।

लेकिन तुम्हारे ऐसे बहुत से भाई हैं जो 'मामा' को नहीं जानते। वे बेचारे इस आनन्द से वंचित रह जाते हैं। वे इसकी मीठी कहानियों, कविताओं और पहेलियों का मजा नहीं चख पाते। इसलिए अगर तुम ऐसे भाइयों से चन्दामामा का परिचय कराओ तो इससे तुम्हारे 'मामा' और उन भाइयों, दोनों को खुशी होगी। तीन चार भाइयों के साथ मिल कर पढ़ने में तुम्हें और भी मजा आयगा। बोलो, आगे से ऐसा ही करोगे न? चन्दामामा का सन्देश उनको भी सुनाओगे न?

रेल सिग्नल पास बैठा एक पीपल पेड़ ऊपर,
एक कौआ रोज़ सुनता गाड़ियों का शब्द 'घर-घर'।
देखता वह—रेल-गाड़ी रोज़ स्टेशन पर पहुँचती
और सीटी शीघ्र देकर फिर वहाँ से छूट चलती।

गाड़ियों के पहुँचने औ छूटने का शोर सुन कर
वह खुशी से फूल जाता पङ्ख अपने फड़फड़ा कर।
एक दिन मन में न जाने, क्या उसे सूझी अचानक?
बुला लाया सभी भाई-बन्धुओं को वह वहाँ तक।

जब सभी कौए वहाँ आ पेड़ पर आसन लगा कर
जम गए तो कहा उसने—'सुनो सब जन कान देकर!
मैं चलाता रेल गाड़ी। जब कहूँ तब आयगी वह
और मेरा हुक्म पाकर फिर यहाँ से जायगी वह।'

"बैरागी"

एक कौए ने कहा—'यह तो कभी हो ही न सकता!
रेल तेरी बात क्यों सुनने लगे? तू व्यर्थ बकता।'
कहा उसने—' बहुत अच्छा, जोर मेरा देख लो सब!
रोक लूँगा रेल गाड़ी को यहाँ कुछ देर तक अब।'

झुकी तख़्ती तभी सिग्नल की, वहाँ आ रेल ठहरी;
सभी कौओं के मनों पर पड़ गई अब छाप गहरी।
और थोड़ा समय बीता, गार्ड ने सीटी बजाई।
कहा कौए ने कि 'अब इस रेल को दे दूँ विदाई!

रेल! अब तू जा यहाँ से, मैं तुझे देता इजाज़त।'
रेल चल दी; इधर कौए की पलट अब गई क़िस्मत।
बन गया सरदार कौओं का, सभी करते बड़ाई।
बन गया नेता बड़ा, अब खूब नामवरी कमाई।
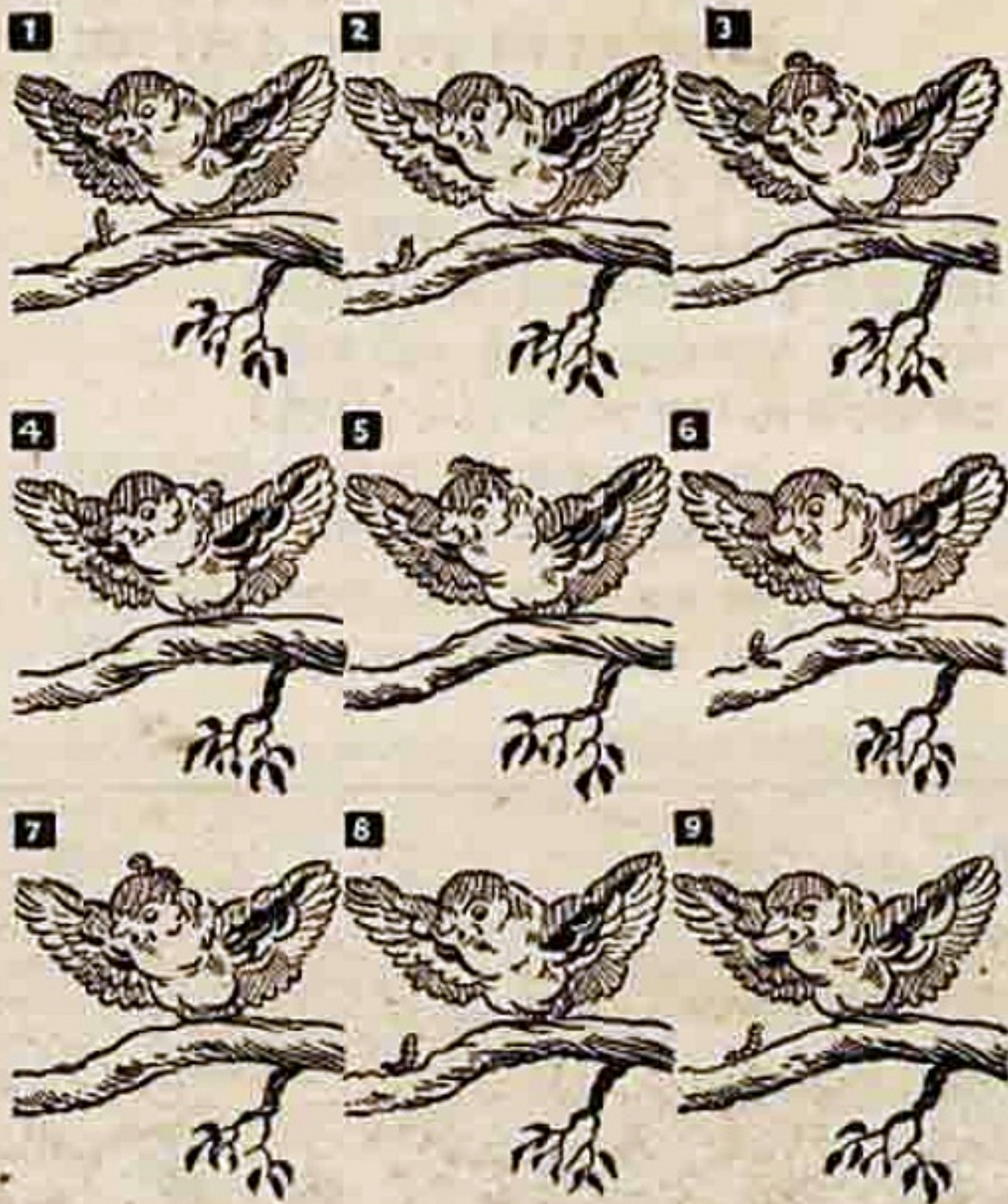
ऊपर नौ चिड़ियाँ दिखाई देती हैं। उनमें दो एक सी हैं। ज़रा बताओ तो देखें, ये दोनों कौन सी हैं! अगर न बता सको तो ५६-वाँ पृष्ठ देखो।

बच्चो! संसार में कौन ऐसा होगा जो सूरज को न जानता हो! सूरज भगवान पूरब की ओर एक क़िले में रहते हैं। वे हर रोज़ अपने सात घोड़ों वाले रथ पर सवार होकर क़िले से निकलते हैं और आस्मान के रास्ते पश्चिम की सैर करने जाते हैं।

सूरज भगवान का क़िला देखने में जितना सुन्दर है उतना ही मजबूत भी है। उनके क़िले के फाटकों पर मोतियों की झालरें झूलती हैं। एक सुन्दर देवी उन फाटकों पर पहरा देती रहती है। वही हर रोज़ सबेरे फाटक खोलती और फिर शाम को बन्द करती है।

उस देवी का सुनहरा आंचल हमेशा जगमग करता रहता है। उसके काले-काले बाल हवा के झोंकों में लहराते रहते हैं। उसका रूप जितना सुन्दर है उतना ही अच्छा उसका स्वभाव भी है। इसीलिए उस देवी को सब कोई प्यार करते हैं। सिर्फ़ देवता और मनुष्य ही नहीं, अबोध पशु-पक्षी भी उसे देख कर आनन्दित होते हैं।

उस देवी का एक ही काम था; सबेरे सूरज भगवान के निकलते समय फाटक खोलना और फिर बन्द कर देना। दिन भर उसे छुट्टी रहती थी। शाम तक वह जहाँ चाहे घूम सकती थी।

शाम को थके-माँदे सूरज भगवान पश्चिमी फाटक पर पहुँच जाते हैं न! इसलिए उस देवी को शाम के वक्त आकर क़िले का पश्चिमी फाटक खोलना पड़ता। यों वह दिन भर चाहे जहाँ-कहीं घूम ले, पर शाम होते ही

श्री अर्जुन

उसे लौटना पड़ता था। नहीं तो सूरज भगवान के लिए फाटक कौन खोलता ! शाम को फाटक बन्द करते ही फिर सबेरे तक उसे छुट्टी रहती ।

फ़ुरसत के समय वह देवी पृथ्वी पर उतर आती और वहाँ के जंगलों में, पहाड़ों पर और नदियों के किनारे घूमती-फिरती। इस तरह शाम तक सैर-सपाटे करके वह समय पर अपना काम करने चली जाती ।

एक दिन जब वह इसी तरह पृथ्वी पर घूम रही थी तो उसे जंगल के राजा वनराज ने देख लिया। देखते ही वह उस पर रीझ गया। ऐसी सुन्दर कन्या उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसने सोचा—"अगर इस से मेरा ब्याह हो जाय तो बड़ा अच्छा हो।" इसलिए उसने उस देवी को बुला कर अपने मन की बात कही। वनराज की सुन्दरता देख कर वह देवी भी राजी हो गई। लेकिन दिक्कत यही थी कि देवी को सुबह और शाम दोनों वक्त अपनी नौकरी बजानी पड़ती थी। इसलिए उसने वनराज से कहा—'मैं तुम से ब्याह करने को राजी हूँ। मगर फ़ुरसत के वक्त ही तुम्हारे यहाँ रह सकूँगी।' वनराज ने इसे मान लिया। तब से वह देवी रोज़ फ़ुरसत के समय आती और पति की सेवा करके चली जाती। एक दिन जब वह देवी अपने पति की सेवा करने पृथ्वी पर आई तो उसने देखा कि उसका पति बीमार हो कर नीचे जमीन पर पड़ा हुआ है। यह देख कर उसे बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा—इस नौकरी के कारण ही पति की सेवा करने के लिए मुझे काफ़ी समय नहीं मिलता। लेकिन मैं यह नौकरी छोड़ कर
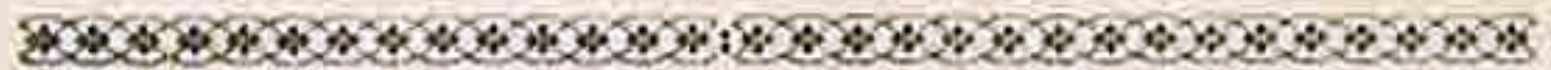
पृथ्वी पर रह भी तो नहीं सकती! इसलिए अगर मैं अपने पति को भी अपने साथ सूर्य-लोक ले जाऊँ तो हमें बिछुड़ना न पड़ेगा।

यह सोच कर दूसरे दिन उसने सूरज भगवान से कहा—"भगवन्! मेरे पति बनराज पृथ्वी पर रहते हैं। इससे मुझे उनकी सेवा के लिए काफ़ी समय नहीं मिलता। अगर उनको भी मेरे साथ यहाँ रहने की इजाज़त मिल जाय तो बड़ा अच्छा हो। तब हम दोनों में बिछुड़ने की नौबत न आएगी और हमें बहुत सुख होगा।"

सूरज भगवान ने खुशी से उसकी विनती मान ली। अब बनराज भी सूर्य-लोक में रहने लगा। देवी को अब पृथ्वी पर उतरने की कोई जरूरत नहीं रही।

तुम तो जानते ही हो कि देवता लोग न कभी बूढ़े होते हैं और न कभी मरते ही हैं। लेकिन बनराज तो पृथ्वी का निवासी था। जब देवी और बनराज को सूर्य-लोक में रहते बहुत दिन हो गए तो बनराज पर बुढ़ापे के चिह्न प्रगट होने लगे। देवी सूर्य-लोक की

रहने वाली थी। इसलिए वह पहले की तरह नवल ही बनी रही। तो भी उसने अपने बूढ़े पति की सेवा में कोई कमी न आने दी। वह पहले की तरह ही उसको प्यार करती रही।

धीरे-धीरे वनराज का मुँह पोपला हो गया। आँखों की शक्ति भी जाती रही। सारे बदन पर झुर्रियाँ पड़ गईं। आवाज काँपने लगी। अब वह बिना लाठी टेके दो कदम भी नहीं चल सकता था। एक दिन उसने अपनी पत्नी को बुला कर कहा—"अब मैं ज्यादा दिन नहीं जीऊँगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि फिर पृथ्वी पर लौट जाऊँ और वहाँ हरी-हरी मुलायम घास पर लेट कर अपनी आँखें मूँद लूँ। मेरे मन में यही एक साध बाकी रह गई है। इसलिए मुझे पृथ्वी पर पहुँचा दो।"

देवी ने सोचा कि पति की इच्छा पूरी करना उसका कर्तव्य है। इसलिए उसने कहा—"आपको सुख पहुँचाने के सिवा मैं और कुछ नहीं चाहती। अगर आप पृथ्वी पर जाना चाहते हैं तो यह आपकी खुशी है। मैं आपको बुढ़ापे से नहीं बचा सकी। लेकिन मौत से बचा लेना चाहती हूँ। आप हरी घास पर लेट जाना चाहते हैं न? अच्छा, मैं ऐसा उपाय करूँगी, जिससे आप हमेशा हरी-हरी घास पर सुख से विचरते रहें।" यह कह कर उसने अपने पति को पतिंगा बना दिया और पृथ्वी पर लाकर हरी घास पर छोड़ दिया। आज भी चाँदनी रातों में वह देवी अपने पति को देखने के लिए पृथ्वी पर उतर आती है। उसे देखते ही पतिंगा आनन्द से आकाश की ओर उड़ने लगता है।

वर्धमान की विचित्र यात्रा

तीन चार साल बीत गए। वर्धमान के जहाज अब भी दूर-दूर के समुन्दरों में चलते और देश-विदेशों से व्यापार करते। इस व्यापार से वर्धमान को बहुत मुनाफ़ा भी होता। लेकिन वर्धमान का मन व्यापार में न लगता था। उसके मन में देश-विदेश घूमने की इच्छा प्रबल हो उठी। उसकी पिछली यात्रा की कहानियाँ सुनते-सुनते लोग अब ऊबने लगे थे। इसलिए वर्धमान ने फिर एक बार यात्रा करने का निश्चय कर लिया।

उसने एक अच्छे से जहाज पर थोड़ा सा माल लाद लिया। फिर एक दिन शुभ-मुहूर्त में चुने हुए नाविकों के साथ वह जहाज पर चढ़ कर सिंहल-द्वीप की ओर चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने सारा माल बेच डाला और छः महीनों के लायक रसद खरीद ली। फिर सब तरह से लैस होकर वह वहाँ से पश्चिम की ओर चला।

पश्चिमी समुन्दर का सफ़र बड़ा खतरनाक होता है। उस समुन्दर में हमेशा आँधी-तूफ़ान उठते रहते हैं। उसमें सफ़र करना क्या है, जान पर खेलना है। चन्द दिनों में वर्धमान का जहाज भयंकर तूफ़ानों में पड़ गया। हवा के जोर में पतवार कुछ काम न करती थी। इसलिए जहाज-वालों को पता ही न था कि वे किस ओर बहे जा रहे हैं। खैर यही थी कि जहाज डूबा नहीं। इस तरह कई हफ्तों तक चलते-चलते जहाज किसी अनजान किनारे से जा लगा।

गलिवर्स ट्रावेल्स का स्वेच्छानुवाद

भगवान का नाम लेते हुए सब लोग जहाज से उतर कर सूखी जमीन पर जा खड़े हुए। उनको यह पता नहीं था कि वह कौन सा टापू है। यह किनारा उत्तर से दक्खिन की ओर फैला हुआ था।

वर्धमान और उसके साथियों को जोर की प्यास लगी हुई थी। वे मीठे पानी के सोतों और झरनों की खोज में चले। वहाँ की जमीन पथरीली थी। आस-पास कहीं एक बूँद भी पानी नज़र न आता था। इसलिए वे लोग एक-एक झुण्ड बना कर चारों ओर निकल गए। वर्धमान अकेला एक ओर चला।

वह बहुत देर तक उन चट्टानों में भटकता रहा। उसका गला सूख गया था। लेकिन कहीं पानी के दर्शन न हुए। आखिर वह हिम्मत हार कर लौट पड़ा। शायद साथियों को पानी का पता लगा हो! लेकिन यह क्या! किनारे पर आकर उसने देखा कि जहाज लंगर उठा चुका है और बड़ी तेजी से दूर समुद्र की ओर बढ़ा जा रहा है।

वर्धमान को बड़ा गुस्सा आया। क्या उसके साथी बौरा गए हैं! या वे उसके साथ धोखे-बाजी करना चाहते हैं! उसको इस सुनसान जगह में छोड़ कर वे क्यों उस तरह जहाज को उड़ा लिए जा रहे हैं! यों सोच ही रहा था कि अचानक उसे एक डरावना दृश्य दिखाई पड़ा। एक भयंकर दैत्य समुन्दर में दौड़ता हुआ उसके जहाज का पीछा कर रहा था। उसका डील-डौल देखते ही वर्धमान के होश उड़ गए। वह घबड़ा गया—कहीं उसने जहाज को पकड़ लिया तो! लेकिन उसके खलासी बड़े होशियार थे। पलक मारते में जहाज आँखों से ओझल हो गया। आखिर वह दैत्य निराश होकर पीछे फिरा। वर्धमान डरा कि कहीं दैत्य की नजर उस पर न पड़ जाए। इसलिए वह सिर पर पैर रख कर भागा और एक चट्टान की आड़ में छिप गया।

थोड़ी देर बाद उसने झाँक कर बाहर देखा तो दैत्य कहीं दीख न पड़ा। उसे शक होने लगा कि कहीं उसकी आँखें धोखा तो नहीं दे रही हैं! उसने आँखें फाड़-फाड़

कर देखा। जगह-जगह दस-दस, बारह-बारह हाथ काँस उगी हुई थी। पास जाकर देखने पर वह मामूली मोथा ही जान पड़ा। थोड़ी ही दूर पर गेहूँ का एक खेत भी था। उसमें एक-एक डंठल चालीस-चालीस हाथ ऊँचा था। कौन कहता कि वह गेहूँ है! खेत में बीचों-बीच एक लम्बी-चौड़ी सड़क गई थी। वह उसी सड़क से चलने लगा। थोड़ी दूर जाने पर उसे काँटों का एक घेरा दिखाई दिया। वह घेरा तिमंजिले मकान के इतना ऊँचा था। उस घेरे में एक जगह टट्टी-सी लगी हुई थी। उस की दूसरी तरफ़ एक और खेत था। वर्धमान उस घेरे को फाँद तो सकता नहीं था। इसलिए उसने उसमें से घुस कर जाने की सोची। इतने में उसे पीछे कुछ आहट सुनाई पड़ी। वर्धमान ने पीछे मुड़ कर देखा तो उसे एक वैसा ही भयङ्कर दैत्य (जैसा कि उसके जहाज को पकड़ने जा रहा था) दिखाई दिया। उसे देखते ही उसके होश गुम हो गए। वह वहीं पौधों की आड़ में छिप रहा।

वह दैत्य उस टट्टी के पास आया और थोड़ी देर तक खड़ा उस खेत की तरफ़ देखता रहा। फिर उसने पीछे मुड़ कर किसी को पुकारा। वर्धमान को ऐसा लगा मानों बादल गरज उठा हो। इतने में वैसे ही बहुत से दैत्य, हाथों में हँसिए लिए, वहाँ आ पहुँचे। जिसने उन्हें पुकारा था वह एक किसान था। ये लोग उसके मजूर थे। किसान ने खेत काट लेने का हुक्म दिया।

टट्टी हटा कर वे खेत में आए और फ़सल काटने लगे। वर्धमान की जान में जान न थी। उन हँसियों को देखते ही उसके बदन में कँपकँपी पैदा हो गई। अब उसकी जान कैसे बच सकेगी? किस तरह वह इन दैत्यों के हाथ से बच कर भाग सकेगा?

वर्धमान खेत के एक कोने से दूसरे कोने में छिपा फिरता था, जिससे वह उन भयङ्कर पैरों के नीचे कुचला न जाए या हँसियों से कट न जाए। लेकिन वह कहाँ तक छिपता! अन्त में वह एक ऐसी जगह आ फँसा, जहाँ से इधर-उधर खिसकने का कोई रास्ता न था। जब एक मजदूर का हँसिया उधर लप-लपाने लगा तब वह जोर से चिल्ला उठा।

उस मजदूर ने जब झींगुर-सी आवाज सुनी तो उसने हँसिया रोक ली और इधर उधर देखने लग गया। आखिर वर्धमान पर उसकी नजर पड़ी। वह अचरज से आँखें फाड़-फाड़ कर उधर देखने लगा। वह वर्धमान को बड़ी सावधानी से उठा कर अपनी आँखों के नज़दीक ले गया और गौर से देखता रहा। आखिर वह उसे अपनी पगड़ी की तह में छिपा कर अपने मालिक के पास ले गया। "मालिक! ज़रा इधर तो देखिए—यह क्या है? कितना नन्हा आदमी! ठीक हमारे अँगूठे जितना! और देखिए तो हमारी तरह इसके भी हाथ-पैर सब कुछ हैं!" उस मजदूर ने अपने मालिक से जाकर कहा।

"अरे, तू पागल तो नहीं हो गया है? क्या बक रहा है—जा, अपना काम देख!" मालिक ने डाँट कर कहा। लेकिन जब उस मजदूर ने अपनी पगड़ी की तह से वर्धमान को निकाला तो उसके अचरज का कोई ठिकाना न रहा। अब तक अनेक लोग वहाँ आकर खड़े हो गए थे। वे सब आपस में कहने लगे—'ऐसी अजीब चीज़ तो हमने कभी नहीं देखी थी।" वर्धमान को बीच में रख कर वे सब उसके चारों ओर बैठ कर देखने लगे कि वह क्या करता है?

वर्धमान बेचारा न समझ सका कि वे लोग उसके बारे में क्या बातें

कर रहे हैं। उसने गिड़-गिड़ाते हुए कहा—"मुझे मारो मत! मैं भी तुम्हारे जैसा ही एक आदमी हूँ। मुझ पर दया करो। मुझे मारो मत!"

उन दैत्यों को यह देख कर बड़ी खुशी हुई कि यह नन्हा आदमी भी उन्हीं की तरह बोलता है। उसकी बातें उनकी समझ में नहीं आईं; लेकिन उसके भाव तो वे समझ ही गए। उस किसान ने उन मज़दूरों को अपने-अपने काम पर लगा दिया और खुद वर्धमान को रूमाल में लपेट कर घर ले गया। वह इसे अपने घर-वालों को दिखाना चाहता था।

किसान जब घर पहुँचा तो भोजन का समय हो गया था। उसने वर्धमान को जेब से निकाल कर अपनी स्त्री को दिखाया। उसको देखते ही वह चौंक कर भय से चिल्ला उठी। "देखने में तो नन्हा सा है। लेकिन ग़ौर से देखने पर पता चलता है कि यह ठीक हमारी ही तरह का आदमी है। डरने की कोई बात नहीं है। लो, हाथ में लेकर देखो।" यह कहते हुए किसान ने वर्धमान को स्त्री के हाथ में रख दिया।

उसकी स्त्री ने कुछ इशारे किए। जब उसने जान लिया कि वर्धमान ये इशारे समझ गया तो उसे बड़ी खुशी हुई। किसान, किसान की स्त्री, बाल-बच्चे और बूढ़ी दादी, सभी उसे अपने बीच में रख कर भोजन करने बैठे। उन्होंने वर्धमान के आगे भी एक दो दाने रख दिए। जब वह दोनों हाथों से उन दानों को उठा कर बड़ी सावधानी से काट-काट कर खाने लगा, तो उन्हें इतनी हँसी आई कि वे ठीक से खाना भी न खा सके। [सशेष]

बच्चो ! साँवली-सी मैना रानी को तुमने देखा ही होगा। वह आठों पहर हमारे घर के चारों ओर झाड़ियों में और पेड़ों पर फुदकती रहती है। इसलिए सब लोग उसे जानते हैं।

मैना आज हमें साँवली-सी दिखाई देती है। लेकिन पहले वह साँवली नहीं थी। पुराने जमाने में वह देखने में बड़ी सुन्दर थी। वह हंस से भी उजली, धुली-पुती और साफ़ दीखती थी। शायद तुम पूछोगे कि फिर उसका रंग साँवला क्यों हो गया ! सुनो, इसके बारे में एक मजेदार कहानी सुनाता हूँ—

एक दिन मैना आसमान में उड़ रही थी कि उसने एक चट्टान पर बैठी हुई एक सुनहरी चिड़िया देखी। वह चिड़िया खिली धूप में जगमगा रही थी। उसके सामने सोने-चाँदी की ढेरियाँ लगी हुई थीं जिन पर सूरज की किरणें चमक रही थीं।

वह चिड़िया सब की आँख बचा कर अपने सोने-चाँदी के खजाने का हिसाब लगा रही थी। लेकिन अब मैना ने उसे देख लिया और उसका भेद खुल गया।

मैना क्यों चुप रहती ! उसने तरह-तरह के सवालों की झड़ी लगा दी—"दीदी ! तुम्हें यह सब सोना-चाँदी कहाँ से मिल गया ? क्या कहीं से उठा लाई हो या किसी देवता ने खुश होकर दे दिया है ?"

वह सुनहरी चिड़िया अपना भेद किसी को बताना नहीं चाहती थी। कहो तो, अपने घर का भेद कौन खोलना चाहेगा ! लेकिन उसने सोचा—"अगर मैं मैना को यह भेद न बताऊँगी तो वह जा कर सब पंछियों में ढिंढोरा पीट देगी। कहेगी कि इसने एक

कृष्णकांत सक्सेना

खजाना छिपा रखा है। तुम सब पंछी मेरे पीछे पड़ जाएँगे। इससे तो अच्छा है कि मैं इसी से यह भेद बता दूँ। बहुत होगा तो यह भी एक खजाना पा जाएगी।" यह सोच कर उसने मैना से सैकड़ों कसमें खिलवाईं कि यह भेद वह किसी से नहीं कहेगी। इसके बाद उसने बताया—"देखो बहन! उधर दूर पर एक पहाड़ की चोटी दिखाई देती है न! उसी के दक्षिण में एक खोह है। तुम निधड़क उस खोह में घुस जाओ। अन्दर जाते ही तुम्हें एक कमरा मिलेगा जिसमें चाँदी के ढेर लगे होंगे। लेकिन तुम उधर आँख उठा कर भी न देखना! थोड़ा और आगे जाने पर दूसरा कमरा मिलेगा जिसमें सोने के ढेर लगे होंगे। तुम उनमें भी हाथ न लगाना। तीसरे कमरे में तुम्हें हीरे जड़े हुए सोने के सिंहासन पर बैठा उस खोह का राजा मिलेगा। तुम उसके सामने घुटने टेक कर जो कुछ भी माँगोगी मिल जाएगा।"

यह सुनना था कि मैना सीधे उस पहाड़ी की ओर उड़ी और पलक मारते-मारते उस गुफा में जा घुसी। कुछ दूर जाने पर चाँदी के खजाने वाला कमरा मिला। चाँदी के ढेर देखते ही उसका मन ललचा गया। लेकिन उसी वक्त सुनहरी चिड़िया की हिदायत याद आ गई और उसने अपने आप को रोका। कुछ और आगे जाने पर उसे सोने का खजाना दिखाई पड़ा। उस पर नज़र पड़ते ही मैना सारी सुध-बुध भूल गई। चिड़िया की बातें न जाने कहाँ हवा हो गईं? "किसी न किसी तरह यह सोना उठा ले जाना चाहिए" यह सोच कर उसने सोने की ढेरी में चोंच मारी।

सोने की ढेरी में मैना की चोंच लगते ही उसमें से एक भयङ्कर भूत उठ खड़ा

हुआ। उस भूत के नथुनों से धू-धू करती आग की लपटें निकल रही थीं। बात की बात में वह कमरा धुएँ से भर गया और मैना का दम घुटने लगा।

"तुम कौन हो? इस कमरे में क्यों घुस आई हो? क्या तुमको मालूम है कि यह सोने का खजाना किस का है? अगर मालूम है तो फिर इस पर चोंच क्यों चलाई? बोलो—जल्दी जवाब दो; वरना देखोगी कि अभी तुम्हारा क्या हाल होता है!" भूत ने डपट कर पूछा।

थर-थर काँपती हुई मैना ने सारा हाल सच-सच कह सुनाया—कैसे सुनहरी चिड़िया से उसकी भेंट हुई! कैसे उसको यह भेद मालूम हुआ और कैसे इस कमरे में आने पर उसके मन में लालच पैदा हुआ! इत्यादि इत्यादि। उसने रोते-धोते यह सब कह सुनाया।

"पूछते ही तुमने सच्चा-सच्चा हाल बता दिया। इसलिए मैं तुम्हें अब की माफ कर देता हूँ। लेकिन तुम्हें लालच का फल तो भुगतना ही पड़ेगा। जाओ—अब कभी ऐसा काम न करना!" यह कह कर भूत ने मैना को कमरे से बाहर निकाल दिया। बाहर आकर देखने पर मैना को मालूम हुआ कि उसका हँस का सा उजला शरीर काला हो गया है। लेकिन उसने सोने की ढेरी में चोंच मारी थी। इसलिए उसकी चोंच में सोना लग गया और वह पीली बन गई। देखा तुमने, मैना के लालच का फल क्या हुआ!

सुनहरी चिड़िया को डरा-धमका कर भेद जान लेना उसकी पहली भूल थी। जान लेने के बाद भी लालच के मारे उसकी हिदायतें भूल जाना और सोने की ढेरी पर चोंच लगाना उसकी दूसरी भूल थी। इसीलिए भूत को गुस्सा आ गया और उसकी दूध-सी देह झुलस कर काली हो गई। फिर भी खैरियत इसी में थी कि उसकी जान बच गई।

सोने का भेड़ा

किसी जमाने में एक राजा था। उसके दो रानियाँ थीं। बहुत दिनों बाद बड़ी रानी के एक लड़की पैदा हुई। लेकिन छोटी रानी के कोई सन्तान न हुई। जब बड़ी रानी की लड़की सयानी हुई तो उसकी सुन्दरता की चर्चा सुन कर दूर-दूर के राजकुमार उस से ब्याह करने के लिए आने लगे। लेकिन छोटी रानी कोई-न-कोई उपाय रच कर सब को निराश कर देती थी। राजा भी उसकी बात नहीं टालता था; इसलिए राजकुमारी का ब्याह नहीं हो सका।

अपनी सौतेली लड़की को और भी कष्ट देने के लिए छोटी रानी ने एक उपाय सोचा। एक दिन उसने राजा से जा कर कहा—"देखिए, ऐरे-गैरे-नत्थू-खैरे सभी राजकुमारी से शादी करने चले आते हैं। यह ठीक नहीं। राजकुमारी के लिए योग्य वर की खोज करनी चाहिए। इस के लिए मुझे एक उपाय सूझ गया है। आप जमीन के अन्दर एक महल बनवाइए। उस महल से लेकर हमारे बाग तक एक सुरंग खुदवा दीजिए। हमारे बाग के कोने में एक तालाब है न! उस तालाब में उस सुरंग का दरवाजा लगवाइए। तालाब में हमेशा पानी भरा रहेगा। इसलिए किसी को उस महल का पता नहीं चलेगा। राजकुमारी को उस महल में रख दीजिए और ढिंढोरा पिटवा दीजिए कि जो राजकुमारी का पता लगाएगा वही उस से ब्याह कर सकेगा। जो इस काम में असफल रहेगा उसका सिर काट कर किले के कंगूरे पर लटका दिया जाएगा।"

राजा ने उसकी यह बात मान ली और उसी प्रकार सब इंतजाम कर दिया।

जब वह गुप्त महल बन कर तैयार हो गया तो राजकुमारी उस में छिपा दी गई। फिर चारों ओर ढिंढोरा पीट दिया गया कि

मदन मोहन

जो राजकुमारी का पता लगायेगा वही उससे ब्याह कर सकेगा। यह खबर सुन कर दुनियाँ के सभी देशों से बहुत से राजकुमार उस से शादी करने आए। लेकिन कोई नहीं जान सका कि राजकुमारी कहाँ छिपी हुई है। उन बेचारों के सिर काट कर किले के कंगूरे पर लटका दिए गए।

वहीं पड़ोस के एक देश में एक राजा रहता था। उसके तीन लड़के थे। यह ढिंढौरा सुन कर उनमें से बड़े लड़के ने एक दिन अपने पिता के पास जा कर कहा—"पिताजी! हमारे पड़ोसी राजा की लड़की किसी गुप्त स्थान में छिपा दी गई है और ढिंढौरा पीट दिया गया है कि जो उसका पता लगाएगा उसी के साथ उसका ब्याह होगा। मैं जा कर उस राजकुमारी का पता लगाना चाहता हूँ। उस राजकुमारी से ब्याह करने से मेरा नाम सारे संसार में फैल जायगा। इसलिए मैं आप की इजाज़त चाहता हूँ।"

तब उसके पिता ने कहा—"बेटा! क्यों नाहक अपनी जान गँवाना चाहते हो। किस हत्यारे ने तुझे यह बात सुझाई! न जाने, कितने राजकुमार उस राजकुमारी का पता लगाने गए। उनमें से एक भी लौट कर नहीं आया। तुम उस राजकुमारी का ख्याल अपने मन से निकाल दो। मैं तुम्हें उस से बढ़ी चढ़ी सैकड़ों राजकुमारियाँ ला दूँगा।"

लेकिन वह राजकुमार अपने पिता की बात क्यों सुनने लगा! उसके सिर पर तो काल सवार था। वह हठ करके राजकुमारी का पता लगाने चला। उसे इस काम के लिए तीन दिन की मोहलत दी गई। लेकिन जब तीन दिन बीत गए और राजकुमारी का पता नहीं लगा तो उसका सिर काट कर किले के कंगूरे पर लटका दिया गया।

जब यह खबर उसके मँझले भाई ने सुनी तो उसने भी राजकुमारी से शादी करने की

ठानी। पिता के बहुत मना करने पर भी वह हठ करके रवाना हुआ। लेकिन वह भी राजकुमारी का पता न लगा सका और उसका भी वही हाल हुआ।

सब से छोटे भाई ने यह खबर सुनी तो उसने भी राजकुमारी से ब्याह करना चाहा। उसके दुखिया माँ-बाप ने उसे बहुत रोका। लेकिन उसने एक न सुनी। वह भी राजकुमारी से शादी करने चल पड़ा।

यह छोटा राजकुमार बड़ा बुद्धिमान और दूरदर्शी था। जाते समय वह एक शहर में पड़ाव डाल कर वहाँ के एक नामी सुनार के घर गया। उसने उसे बहुत सा सोना देकर एक बड़ा सुन्दर सोने का खोखला भेड़ा बनवाया। जब भेड़ा बन कर तैयार हो गया तो राजकुमार ने उस सुनार को अच्छा इनाम देकर कहा—"तुम्हारी कारीगरी देख कर मुझे बड़ी खुशी हुई। अब तुम यह सोने का भेड़ा राजा के पास ले जाओ और कहो कि यह भेड़ा राजकुमारी के लिए एक राजकुमार ने भेंट में दिया है।" सुनार ने उसकी बात मान ली।

जब अँधेरा हो गया तो राजकुमार ने सब की आँख बचा कर उस भेड़े को खोला और उसमें घुस कर उसे बंद कर लिया।

दूसरे दिन जब सुनार उस भेड़े को राजा के पास ले गया तो राजा उसे देख कर बहुत खुश हुआ। उसने सुनार को खूब इनाम दिया। उसने उस भेड़े को गुप्त महल में राजकुमारी के पास पहुँचा दिया।

उस सुन्दर भेड़े को देख कर राजकुमारी फूली न समाई। उधर भेड़े में छिपा हुआ राजकुमार एक छोटे छेद से राजकुमारी की सुन्दरता देख कर मन में अचरज कर रहा था। नौकर राजकुमारी के लिए रोज खाना ला कर एक चौकी पर रख जाता था। जब राजकुमार को भूख लगती तो वह उस भेड़े में

से निकल कर चुपके से राजकुमारी का खाना खा जाता और फिर अपनी जगह छिप रहता। जब दो तीन बार ऐसा हुआ तो राजकुमारी को बड़ा अचरज हुआ। वह एक रात सोने का बहाना करके जागती रही और इस तरह चोर को पकड़ लिया।

उस राजकुमार का रूप देख कर राजकुमारी मोहित हो गई। उसने मन ही मन निश्चय किया कि उसको छोड़ वह और किसी से ब्याह नहीं करेगी। अब दोनों ने मिल कर एक उपाय रचा। राजकुमारी ने उस भेड़े का एक कान तोड़ दिया और मरम्मत के लिए अपने पिता के पास भिजवा दिया। राजा ने भेड़े को सुनार के यहाँ भेज दिया। राजकुमार तो उसमें छिपा ही था। सुनार के घर जाने के बाद वह निकल पड़ा और सीधे राजा के पास जाकर बोला—'मैं आप की बेटी से ब्याह करने आया हूँ।' यह सुन कर राजा ने उसे बहुत समझाया—'क्यों नाहक अपनी जान गँवाते हो? तुम्हारे दो भाई तो मारे गए। मेरी बात मानो और घर लौट जाओ।' लेकिन राजकुमार ने उसकी एक न सुनी। तब लाचार होकर राजा ने कहा—"अच्छा, तो जाओ, पहले राजकुमारी का पता लगा लाओ।"

राजकुमार टहलते टहलते बाग की तरफ चला, जैसे वह कुछ जानता ही न हो। लेकिन छोटी रानी चुपके से उस का पीछा कर रही थी। तब राजकुमार ने तालाब के पास जाकर राजा को बुलवाया और कहा—"पहले इस तालाब का पानी निकलवा दीजिए।" राजा ने थोड़ा आगा-पीछा किया। लेकिन आखिर लाचार होकर तालाब का पानी निकलवा दिया।

अब तो सुरंग का दरवाजा साफ़ साफ़ दिखाई देने लगा। राजकुमार ने दरवाजा खुलवाया। सीढ़ियों से नीचे उतरने पर गुप्त महल दिखाई देने लगा। छोटी रानी ने देखा

कि सारा भेद खुल गया तो उसने आगे जाकर कहा—"राजकुमार! पाँच मिनिट के लिए तुम रुक जाओ। मैं जाकर राजकुमारी को तुम्हारे आने की खबर दे दूँ।"

महल के अंदर जाकर छोटी रानी ने और एक चाल चली। उसने राजकुमारी की सभी सखियों को उसकी सी पोशाक पहना दी जिससे राजकुमार राजकुमारी को पहचान न सके। फिर उसने राजकुमार को अंदर ले जाकर कहा—"बेटा, जब तुम इनमें से अपनी राजकुमारी को पहचान लोगे तभी तुम्हारी शादी हो सकेगी। नहीं तो जो नतीजा होगा वह तुम को मालूम ही है।"

राजकुमार अपनी राजकुमारी को आसानी से पहचान सकता था। तो भी उसने अपनी चालाकी दिखाने के लिए एक उपाय किया। उसने अपनी जेब से मुट्ठी भर अशर्फियाँ निकाल कर फर्श पर बिखेर दीं। लौंड़ियाँ सब उन पर टूट पड़ीं। अकेली राजकुमारी चुपचाप खड़ी रह गई। बस, राजकुमार ने उसका हाथ पकड़ लिया।

राजा को इस राजकुमार की होशियारी देख कर बड़ी खुशी हुई। कुछ ही दिनों बाद बड़ी धूम-धाम के साथ दोनों का ब्याह हो गया।

अब तक उस राजकुमारी से ब्याह करने की कोशिश में निन्यानबे राजकुमारों के सिर क़िले की दीवार पर लटक चुके थे। अगर छोटी रानी की चाल चलती तो वह इस राजकुमार का सिर भी उनमें जोड़ देती और सौ की संख्या पूरी कर देती। लेकिन उसकी कोशिश बेकार गई। अब राजा का मन भी उस से फिर गया था। अगर राजकुमार न रोकता तो राजा उसे मरवा भी डालता। लेकिन राजकुमार तो उसकी तरह ईर्ष्यालु नहीं था न!

पुराने जमाने की बात है। चीन में 'यङ्ग लो' नामक राजा राज्य करता था। उस समय पेकिंग शहर चीन की राजधानी था। उस शहर में बड़े-बड़े आलीशान महल थे।

कुछ दिन के बाद राजा 'यङ्ग लो' के मन में आया कि एक ऐसा घण्टा बनवाना चाहिए जिसकी आवाज़ सारे शहर में सुनाई दे। ऐसा घण्टा ऊँची मीनार से लटका दिया जाएगा तो शहर की रौनक़ और भी बढ़ जाएगी। इस काम में चाहे जितना भी खर्च हो—कोई परवाह नहीं। घण्टा तो बनवाना ही चाहिए।

यह सोच कर उसने अपने दरबारियों को बुलवाया और हुक्म दिया—"मैं एक बड़ी ऊँची मीनार बनवा कर उस पर एक बड़ा भारी घण्टा लटका देना चाहता हूँ। यह घण्टा संसार में सबसे बड़ा और शानदार हो। जब यह घण्टा बजे तो सारे शहर में, दूर-दूर तक इसकी 'टन-टन' आवाज़ साफ़ सुनाई दे। इसके लिए अगर ज़रूरत पड़े तो मैं अपना सारा खजाना लुटा देने को तैयार हूँ। जाओ, तुम लोग देश के कोने-कोने में ढूँढ़ कर एक ऐसा कारीगर ले आओ, जो यह शानदार घण्टा बना सके। मैं उस कारीगर को मुँह-माँगा इनाम दूँगा।"

बादशाह के हुक्म के मुताबिक सारे मुल्क में ढिंढोरा पिटवा दिया गया। दरबारी लोग चारों ओर कारीगरों की खोज करने लगे। बहुत दिन के बाद आखिर उन्हें ऐसा कारीगर मिला जिसने इस का बीड़ा उठाया। उसका नाम था 'कुवान-यू'। वह एक मशहूर लोहार था। चीन देश के बहुत से लोग उसे जानते थे। कुवान-यू ने आकर बादशाह से मुलाक़ात की। मामला तय हो गया। बादशाह भी ऐसा होशियार कारीगर पाकर बड़ा खुश हुआ।

राधारमण

बादशाह ने कुवान-यू के हाथ में काफी रुपया रख दिया। उसके मातहत काम करने के लिए बहुत से कारीगर नियुक्त हुए। कुवान-यू ने रात-रात भर जग कर अनेकों पोथी-पत्र उलटे और अनेक धातुएँ मिला कर ढालने की एक तरकीब सोच निकाली। घण्टे के लिए एक बड़ा भारी सांचा तैयार किया। जब गली हुई धातु सांचे में ढालने का दिन आया तो बादशाह अपने दरबारियों के साथ तमाशा देखने आया।

पर कुवान-यू की बदनसीबी तो देखो कि गली हुई धातु सांचे में ढालते ही सांचा फूट कर टुकड़े-टुकड़े हो गया। जमीन पर गली हुई धातु के पनाले बह निकले। वर्षों की मेहनत और अपार धन इस तरह बेकार होते देख कुवान-यू के दुख का ठिकाना न रहा। लेकिन बादशाह ने उसको दिलासा देते हुए कहा—"कुवान-यू! तुम कुछ भी सोच न करो। जो होना था सो हो गया। बड़ों से भी कभी-न-कभी भूल-चूक हो ही जाती है। तुम एक बार हार गए तो क्या हुआ! फिर से कोशिश करो, इस बार जरूर सफल हो जाओगे। रुपए-पैसे की कुछ चिन्ता न करो।" यह कह कर बादशाह फिर से सब इन्तजाम करके अपने महल को लौट गया।

आखिर कुवान-यू ने किसी तरह फिर हिम्मत बाँधी और बरसों पोथी-पत्रे उलटने के बाद फिर एक बार कोशिश की। इस बार धातु को गला कर सांचे में ढालते वक्त बादशाह, उनके दरबारी, और भी बहुत से लोग तमाशा देखने आए। इस बार सांचा नहीं फूटा। लेकिन जो घण्टा तैयार हुआ वह चलनी की तरह छेदों से भरा हुआ था।

इस तरह दूसरी बार भी बरसों की मेहनत और बहुत सा रुपया मिट्टी में मिलते देख कर बादशाह को बड़ा गुस्सा आया और

उसने कुवान से कहा—"देखो, मैं तुम्हें और एक मौक़ा देता हूँ। अगर तुम इस बार भी सफल न हुए तो मैं तुम्हारी बोटी-बोटी उड़वा दूँगा! समझे?"

कुवान-यू ने घर जाकर सारे पोथी-पत्रे फिर से उलटे। लेकिन उसे कोई नई तरकीब न सूझी। घण्टा तो उसे बनाना ही था। लेकिन इस बार भी फिर वही हुआ तो! वह और आगे न सोच सका। उसने अपनी प्यारी बेटी 'कोवाय' को बुला कर सारा हाल कह सुनाया और यह भी बता दिया कि अब सिर्फ मौत की घड़ियाँ गिनते रहना ही बाकी है।

उसकी बेटी कोवाय का रूप जितना सुन्दर था गुण उससे कहीं बढ़े-चढ़े थे। वह अपने पिता से बहुत प्यार करती थी। पिता पर यह संकट आया देख उसे बड़ा दुख हुआ। आखिर वह सोच-विचार कर घर से बाहर निकली और वहीं नज़दीक की पहाड़ियों पर रहने वाले एक साधू के पास गई। वहाँ उसने साधू के पैरों पड़ कर बड़ी दीनता के साथ सारा हाल कह सुनाया। साधू ने उस पर तरस खा कर कहा—"बेटी! तुम्हारे पिता ने घंटा तैयार करने में कोई गलती नहीं की। पोथी-पत्रे उलट-पलट कर उन्होंने जो हिसाब लगाया उसमें भी कोई भूल-चूक न थी। घण्टे के फूटने का कारण कुछ और ही था। हरेक बड़ा कार्य करते समय कुछ-न-कुछ बलि देनी चाहिए। इस घण्टे की गली हुई धातु में जब तक एक शीलवती कन्या का लहू नहीं मिलाया जाएगा तब तक घण्टा बनाने का यह प्रयत्न सफल नहीं होगा।"

साधू से इतना जान कर कोवाय बड़े उत्साह के साथ घर लौट आई और अपने पिता के पास जाकर बोली—"पिताजी! आप कुछ चिन्ता न कीजिए। इस बार आप अपनी कोशिश में जरूर कामयाब हो जाएँगे। इस बार घण्टा

ठीक-ठीक उतरेगा। राजा भी खुश होकर आपको बहुत से ईनाम देंगे। आपका यश सारे चीन देश में फैल जाएगा।" बेचारे कुवान-यू को क्या मालूम कि उसकी बेटी इतने विश्वास के साथ क्यों बोल रही है! उसे क्या खबर थी कि उसकी बेटी के मन में क्या है! फिर भी उसे उस पर बड़ा विश्वास था और वह जानता था कि वह कभी झूठ नहीं बोलती। इसलिए फिर उसने घण्टा ढालने की तैयारी कर दी। जब वह दिन आया तो बहुत लोग तमाशा देखने आए।

जब गली हुई धातु सांचे में डाली जा रही थी तो लोगों के बीच में कोई खलबली सी मच गई। उस समय कुवान-यू सांचे के नज़दीक खड़ा था। उसने देखा कि उसकी बेटी भीड़ को चीरती हुई उसकी ओर आ रही है। वह कहना ही चाहता था कि 'बेटी! यहाँ लौ लगती है। तुम यहाँ मत आओ!' कि इतने में वह दौड़ कर उस विशाल-काय सांचे में कूद पड़ी। कुवान-यू ने हाथ फैला कर उसे पकड़ना चाहा, लेकिन सिर्फ उसके बाएँ पैर की जूती ही उसके हाथ आई। देखते ही देखते कोवाय उस खौलती हुई धातु में गल गई। किसी को इसका रहस्य नहीं मालूम हुआ।

यों घण्टा तैयार हो गया। लेकिन प्यारी बेटी को खोकर कुवान-यू की दुनियाँ अँधेरी हो गई।

आज भी जब उस महा-नगर में वह घण्टा बजता है तो उसकी टन-टन की आवाज़ 'पे' 'पे' कह कर पुकारती है। चीनी भाषा में 'पे' शब्द का मानी होता है—जूता। इसीलिए जब-जब वह घण्टा बजता है तो लोग आपस में कहते हैं—"देखो, वह कुवान-यू की लड़की अपना जूता माँग रही है।"

कोवाय ने अपनी जान गँवा कर भी पिता की पत रख ली। इसी से उस का नाम अमर हो गया।

किसी गाँव में विश्वासी नामक एक गरीब आदमी रहता था। मुद्दत के बाद जब उसके एक लड़की पैदा हुई तो उसने उसका 'मुन्नीबाई' नाम रखा और बड़े लाड़-प्यार के साथ पालने लगा।

उसकी औरत ने एड़ी-चोटी का पसीना एक करके कुछ रुपये कमाए और उनसे एक अशर्फी खरीदी। एक दिन उसने वह अशर्फी अपने पति के हाथ देकर कहा—"जाइए, किसी सुनार के पास जाकर इस अशर्फी से हमारी मुन्नी के लिए बालियाँ बनवा लाइए।" विश्वासी सुनार के घर चला।

उस गाँव के जमीन्दार का नाम रामपाल सिंह था। बाबू रामपाल सिंह की स्त्री बड़ी भली औरत थी। वह दीन-दुखियों की बड़ी सहायता करती थी।

विश्वासी सुनार के घर जा रहा था। पर बीच में रामपाल सिंहने उसे देख लिया और बुला कर गपशप करने लगे। बैठक-खाने में दरी बिछी हुई थी। उन्होंने विश्वासी को उस पर बैठ जाने को कहा और खुद गद्दे पर बैठ कर गाँव का हाल-चाल पूछने लगे। इतने में उनकी स्त्री उनकी तीन साल की छोटी लड़की को ले आई और वहाँ बिठा कर चली गई। उस लड़की के हाथ में सोने के कंगन देख कर विश्वासी मन ही मन सोचने लगा—"अगर हमारी मुन्नी के हाथों में भी ऐसे ही कंगन होते तो कितना अच्छा होता!"

इतने में जमीन्दार की स्त्री अंदर से घबराई हुई आयी और चारों ओर ऐसे ढूँढ़ने लगी जैसे कोई चीज़ खो गई हो। जब जमीन्दार साहब ने पूछा कि क्या खोज रही हो, तो उसने बताया—"लड़की रो रही थी, इसलिए उसका मन बहलाने के लिए मैंने उसके हाथ में दो सोने की अशर्फियाँ रख दी थीं। लेकिन

धीरचन्द्र नाग

उसने अशर्फी नहीं ली, तो भी कोई उस पर यकीन नहीं करेगा। इसलिए उसने सोचा कि अपनी अशर्फी जमीन्दार साहब को दे दे और कह दे कि आप की अशर्फी मैंने ही ले ली थी। लेकिन तब उसकी लाड़ली पुत्री के लिए बालियाँ कहाँ से आयेंगी? लौट कर वह अपनी पत्नी को क्या जवाब देगा? इस तरह बड़ी देर तक विश्वासी के मन में उथल पुथल मचती रही। आखिर उसने अपनी अशर्फी निकाल कर जमीन्दार साहब के हाथ में रख दी और उदास मन से घर लौट गया।

अब खोजने पर एक ही दिखाई देती है; दूसरी का पता नहीं चलता।"

इतना सुनते ही जमीन्दार साहब ने विश्वासी से पूछा—"क्यों विश्वासी! कहीं वह भूल से तुम्हें तो नहीं मिली?" अब तो विश्वासी पशोपेश में पड़ गया। जमीन्दार साहब की एक अशर्फी खो गई है। तिस पर वह ठहरा गरीब आदमी। अशर्फी भी ठीक उसकी मौजूदगी में खो गई है। इसलिए जमीन्दार साहब को अगर उस पर शक हो भी गया तो उस में अचरज की कोई बात नहीं। इतना ही नहीं, उस की जेब में ठीक एक ही अशर्फी है। अब वह लाख कहे कि

विश्वासी की स्त्री बार बार उससे पूछती—"कहिए, क्या बालियाँ तैयार हो गईं? अब तक जरूर बन गई होंगी। जाकर सुनार के यहाँ से ले क्यों नहीं आते?"

विश्वासी कोई न कोई बहाना करके टाल देता। इस तरह कुछ दिन बीत गए। इतने में एक दिन संयोगवश वह सुनार उसी राह से जा रहा था। उसे विश्वासी की स्त्री ने देख लिया। वह तुरंत उसे बुला कर डपटने लगी कि 'बालियाँ बनाने में तुमने इतने दिन क्यों लगा दिये?' बेचारा सुनार भौंचक रह गया। वह क्या जाने? उसने साफ़-साफ़ कह दिया—'कैसी बालियाँ? मुझे तो किसी ने

रत्ती भर भी सोना नहीं दिया है।' विश्वासी जब वहाँ आया तो उसने देखा कि भंडा फूट गया। अब बहाने बनाने से काम नहीं चलने का। तब उसने उस दिन जमीन्दार के घर जो घटना घटी थी, उसका पूरा किस्सा सुना दिया। सुनते ही उसकी स्त्री पछाड़ खाने लग गई।

एक दिन जमीन्दार साहब की स्त्री को आँगन बुहारते वक्त एक कोने में रखे धान के बोरों के नीचे एक अशर्फी मिली। उसे बड़ा भारी अचरज हुआ। उस ने जल्दी से जाकर अपनी संदूक खोली और अपनी अशर्फियाँ गिनीं। उसने सोचा—"मेरी अशर्फियाँ कुल चौदह थीं। संदूक में अब भी वही चौदह हैं। उस रोज विश्वासी ने एक अशर्फी ले ली थी। लेकिन उसने फिर तुरंत लौटा दी थी। फिर बोरों के नीचे यह अशर्फी कहाँ से आ गई?" तब उसने अपने पति के पास जाकर यह बात कह सुनाई। उसने भी सभी अशर्फियाँ हाथ में लेकर उलट-पुलट कर देखीं। तेरह अशर्फियाँ १८३० की थीं। लेकिन चौदहवीं अशर्फी १८४० की थी। तब जमीन्दार साहब ने कहा—"हमने चौदहों अशर्फियाँ एक ही बार खरीदी थीं और सन एक ही साल की थीं। ये तेरहों अशर्फियाँ हमारी हैं; लेकिन यह चौदहवीं किसी और की है।"

तब उसकी स्त्री के मन में यह ख्याल हुआ कि हो न हो, यह विश्वासी की अशर्फी है। उसीने तो उस दिन अपनी जेब से एक अशर्फी निकाल कर दी थी। बस, उसने तुरंत विश्वासी को बुला भेजा। बेचारा रोनी सूरत लिए वहाँ आया तो जमीन्दार की स्त्री ने उससे पूछा—"सच बताओ, उस दिन तुमने जो अशर्फी अपनी जेब से निकाल कर दी थी, वह किसकी थी?" सुनते ही बेचारा सहम गया कि न जाने, अब कौन सी बला

सिर पड़ने वाली है। तब जमींदार की स्त्री ने उसे धीरज बँधा कर कहा—"सच बोलो, डरने की कोई बात नहीं।" तब बेचारे ने रोते-रोते सारा किस्सा कह सुनाया। सुन कर जमींदार की स्त्री बहुत पछताने लगी—"अरे! हमने अकारण ही एक सच्चे आदमी पर शक किया और उसके मन को इतना कष्ट पहुँचाया। बेचारा मन ही मन कितना कलपा होगा!" उसने वह अशर्फी विश्वासी को लौटा दी। अशर्फी लेकर वह खुशी-खुशी घर चला गया।

एक हफ्ता बीत गया। अचानक एक दिन विश्वासी को जमींदार साहब के घर से खबर आई कि स्त्री और बच्ची को साथ लेकर तुरन्त आओ। अब विश्वासी उनके घर जाने से डरता था। न जाने, कौन सी आफ़त सिर पर आ जाय! लेकिन करता क्या? जमींदार का हुक्म टाला भी तो नहीं जा सकता था!

आखिर वह डरते-डरते अपनी स्त्री और बच्ची को साथ ले जमींदार के घर गया। जाकर उसने देखा कि वहाँ जमींदार और उनकी स्त्री के अलावा सुनार भी बैठा हुआ है। सुनार ने एक छोटी सी पोटली जमींदार की स्त्री के हाथ में दे दी। जमींदार की स्त्री ने विश्वासी की स्त्री के हाथ से मुन्नीबाई को ले लिया और अपने पास बिठा लिया। फिर उसने वह पोटली खोल कर तरह-तरह के जेवर निकाले और अपने हाथों से मुन्नी को पहना दिए। मुन्नी के पैरों में कड़े, हाथों में कङ्गन, गले में हार, कानों में बालियाँ और उँगलियों में अँगूठियाँ चमक रही थीं।

जेवर पहन कर जब मुन्नी उछलने-कूदने लगी, तब सब का हृदय आनन्द से भर गया। विश्वासी ने सोचा—"भगवान जब दुख देते हैं, तब उसके साथ सुख भी लगा देते हैं!

एक दिन ब्रह्माजी एक बूढ़े के वेश में गङ्गा किनारे बैठे हुए थे और वहाँ ज़मीन पर उगे हुए कुश के अंकुर उखाड़-उखाड़ कर गाँठें डाल रहे थे। उधर से जाते हुए एक ब्राह्मण-युवक ने उस विचित्र बूढ़े को देख कर कहा—"क्यों दादाजी! आप यह क्या कर रहे हैं? क्या आपको कोई दूसरा काम नहीं सूझा, जो यहाँ बैठे-बैठे तिनके जोड़ कर गाँठें लगा रहे हैं?"

तब ब्रह्माजी ने सिर झुका कर उसी तरह अपना काम करते हुए जवाब दिया—"बेटा! ये मामूली गाँठें नहीं हैं। ब्रह्मा की गाँठें हैं। समझ लो कि काशी में एक लड़की है और रामेश्वर में एक लड़का; गया में एक लड़की है और द्वारका में एक लड़का; मैं काशी और गया की लड़कियों और रामेश्वर और द्वारका के लड़कों के बीच गठ-बन्धन करता हूँ और वे जीवन भर के लिए एक-दूसरे से बँध जाते हैं। दोनों का ब्याह हुए बिना नहीं रह सकता। ये वही विधि की गाँठें है भई!"

यह सुन कर ब्राह्मण-युवक को और भी अचरज हुआ और उसने उस बूढ़े को चिढ़ाने के लिए कहा—"वाह! वाह! तो तुम काशी की लड़की और रामेश्वर के लड़के में मनमानी गाँठ डाल देते हो और वे पति-पत्नी बन जाते हैं! क्या सिर्फ़ तुम्हारे कहने से मैं इस बात पर यक़ीन कर लूँ! अच्छा तो बताओ देखें, मेरा ब्याह किस लड़की से होने वाला है?"

तब उस बूढ़े ने मुस्कुराते हुए कहा—"तो मैं झूठ थोड़े ही बोल रहा हूँ! इसी

पी० भानुमती

को होनहार कहते हैं बेटा! अगर मेरी ये गाँठें खुल गईं तो संसार ही नष्ट हो जाएगा। तुम मेरी बातों पर विश्वास करो।" यह कहते हुए उसने पहले से डाल कर रखी हुई एक गाँठ निकाली और उस युवक को दिखा कर कहा—"हरिद्वार के निकट एक अछूत-टोले में भगतराम नामक एक चमार रहता है। उसी की लड़की से तुम्हारी शादी होने वाली है। यही तुम्हारे भाग्य में लिखा है।"

यह सुन कर युवक को बड़ा गुस्सा आया। उसने उस बूढ़े को भला-बुरा कहते हुए यह प्रतिज्ञा की—"अच्छा, तो मैं भी देखूँगा कि तुम्हारी इन गाँठों में कितना बल है! तुम चमार की लड़की से मेरा ब्याह कराओगे? क्या खूब! तो सुन लो—अगर मैंने ब्राह्मण की लड़की से शादी न की तो मेरा नाम श्रीराम शर्मा नहीं।" यह कहते हुए वह ब्राह्मण-युवक तमतमाता हुआ वहाँ से चला गया। उसको इस तरह गुस्सा करते देख कर बूढ़ा मन ही मन खूब हँसा।

घर पहुँचने के बाद श्रीराम शर्मा के मन में चिंता पैदा हो गई। उसे बूढ़े की बातों पर विश्वास तो न था; लेकिन न जाने क्यों, उसका मन घबरा रहा था। आखिर बहुत देर तक सोचने-विचारने के बाद वह हरिद्वार की ओर रवाना हुआ।

वहाँ पहुँच कर पूछ-ताछ करने पर उसे मालूम हुआ कि अछूत-टोले में सचमुच ही भगतराम नाम का एक चमार है और उसके एक लड़की भी है।

अब तो शर्मा और भी घबरा गया। उसे न सूझा कि क्या किया जाय! आखिर उसने सोचा—"किसी न किसी उपाय से इस

लड़की को मरवा कर गङ्गा में बहा दिया जाय तो मेरी बला टल जाएगी और बूढ़े की बात झूठी हो जाएगी।" यह सोच कर उस ने उस गाँव के चौकीदार को बुला कर उस से कानाफूसी की—"अगर तुम भगतराम की लड़की को मार कर गङ्गा में बहा दो तो मैं तुम्हें मुँह-माँगा ईनाम दूँगा।"

ईनाम का नाम सुनते ही चौकीदार का मन ललचा गया। लेकिन उसने जब सोचा कि इसके लिए एक बेगुनाह लड़की की हत्या करनी होगी, तो वह पसोपेश में पड़ गया। उससे न ईनाम का लालच छोड़ते बनता था और न उसका मन हत्या करने के लिए ही राजी होता था। आखिर बहुत सोच विचार कर उसने एक ऐसा उपाय निकाला, जिससे उसे इनाम मिल जाय; पर हत्या का पाप न लगे। उसने एक काफ़ी बड़ी बाँस की टोकरी बनवाई। फिर एक रात को वह सबकी आँख बचा कर बड़ी होशियारी से भगतराम के घर से उसकी लड़की को उड़ा लाया।

फिर उसने उस लड़की को टोकरी में लिटा दिया और ले जाकर शर्मा को दिखा दिया, जिससे उसको पूरा विश्वास हो जाय। टोकरी में लेटी हुई लड़की को देख कर शर्मा की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने समझा कि अब उसकी बला टल गई। उसने चौकीदार की होशियारी को बहुत सराहा और कहा—'शाबास भई! तुमने जो कुछ किया वह और किसी से नहीं हो सकता था। अब तुम इस टोकरी को ले जाओ और चुपके से गङ्गा जी में बहा दो। लौट कर अपना ईनाम ले लो। मैं यहीं तुम्हारी राह देखता रहूँगा।'

चौकीदार दौड़ता गया और उस टोकरी को गङ्गा की धार में रख आया। शर्मा ने

उसे ईनाम दिया और वह खुशी-खुशी चला गया। शर्मा की छाती पर से एक पहाड़ सा हट गया। वह निश्चिन्त होकर घर लौटा और सुख से रहने लगा।

कुछ दिन के बाद शर्मा के माता-पिता उसके लिए एक योग्य लड़की की खोज करने लगे। एक जगह एक अच्छी लड़की मिली। लेकिन ठीक ब्याह के पहले ही उस लड़की की माँ बीमार पड़ गई। इसलिए ब्याह रुक गया। इसके बाद और एक जगह ब्याह की बात पक्की हुई। पर कन्या के पिता जब वर को देखने आए तो अचानक किसी भयङ्कर रोग से चल बसे। इस तरह उस बार भी ब्याह रुक गया। अब कोई शर्मा को अपनी लड़की देने को राजी न होता था। आखिर शर्मा के माँ-बाप ने रुपये का लालच देकर एक ग़रीब ब्राह्मण की कन्या से ब्याह की बात पक्की की। लेकिन ठीक ब्याह के दिन उस लड़की को साँप ने डस लिया और वह मर गई।

अब चारों ओर यह बात फैल गई कि शर्मा में कोई कुलच्छन है, जिससे जो उसको कन्या देना चाहता है उस के सिर पर कोई न कोई सङ्कट आ पड़ता है। इसलिए अब कोई उस को अपनी लड़की देने को तैयार न होता था। शर्मा के माँ-बाप मन ही मन चिन्ता से घुलने लगे। उन्हें अब पूरा विश्वास हो गया कि शर्मा का ब्याह देखने का सौभाग्य उनकी तकदीर में नहीं बदा है। यह सब देख कर शर्मा बहुत उदास हो गया।

एक दिन वह अपने माँ-बाप की आज्ञा लेकर तीर्थ-यात्रा करने चल पड़ा। थोड़े दिनों में वह घूमते-घूमते काशी जा पहुँचा

एक दिन वह काशी-क्षेत्र में घूम रहा था। अचानक ज़ोर से पानी बरसने लगा। दम भर में शर्मा के सारे कपड़े भींग गए। वह जाड़े से थरथराता हुआ पास के एक घर के बरामदे में जाकर खड़ा हो गया। थोड़ी देर में घर का मालिक खा-पीकर बरामदे में आया तो एक कोने में दुबके हुए शर्मा पर उसकी नज़र पड़ी। उसे उस पर दया आ गई। उसने उसे अन्दर बुला कर बड़े प्रेम से खिलाया-पिलाया।

उस घर के मालिक के एक सयानी लड़की थी। वह उस लड़की के लिए वर ढूँढ रहा था। शर्मा को देखते ही वह सोचने लगा कि अगर इसके साथ लड़की का ब्याह हो जाय तो कितना अच्छा हो! लड़का देखने में सुन्दर था। पढ़ा लिखा और सज्जन मालूम होता था। इससे ज्यादा और चाहिए क्या!

इसलिए बातचीत के सिलसिले में उसने शर्मा के माता-पिता, घर-बार, जमीन-जायदाद की हालत भी जान ली। अन्त में उसने अपने मन की बात उसे बता दी।

शर्मा को इससे बढ़ कर और क्या चाहिए था! वह बेचारा तो निराश हो चला था कि अब इस जन्म में उसका ब्याह होने वाला नहीं। इसलिए वह तुरन्त राजी हो गया। शुभ-मुहूर्त में शर्मा का अन्नपूर्णा से (उस लड़की का नाम अन्नपूर्णा था।) ब्याह हो गया।

ब्याह हो जाने के बाद कुछ दिन तक शर्मा ससुराल में रहा। एक दिन उसे उस घर के पिछले कमरे में बाँस की एक टोकरी दीख पड़ी। उसे देखते ही शर्मा के पेट में

खलबली मच गई। उसने तुरन्त जाकर अपने ससुर से पूछा—"ससुर जी! यह बाँस की टोकरी आपको कहाँ मिली?" तब उसके ससुर ने कहा—"बेटा! यह कोई मामूली टोकरी नहीं है। यह भगवान की देन है। बहुत दिनों तक हमारे कोई सन्तान न थी। तब हमने देवी अन्नपूर्णा की पूजा की। एक रात देवी ने तुम्हारी सास को सपने में दर्शन देकर कहा—'थोड़े ही दिनों में तुमको एक लड़की मिल जाएगी। तुम उस लड़की को मेरा नाम रख देना।' उसके कुछ ही दिनों बाद एक दिन मैं गंगा में नहा रहा था। इतने में एक बाँस की टोकरी बहती हुई मेरी ओर आई। जब मैंने उसे खोल कर देखा तो उसमें डेढ़-दो साल की एक बच्ची मिली। मैंने समझ लिया कि यह देवी की ही कृपा है। तब हमने इसका नाम अन्नपूर्णा रख दिया और प्रेम से पाला-पोसा। वह टोकरी देवी की दया की निशानी है। इसी से हमने उसे हिफ़ाज़त से रख छोड़ा है।" इतना सुनते ही शर्मा का मन बेचैन हो गया। उसे पक्का विश्वास हो गया कि उसकी स्त्री अन्नपूर्णा हरिद्वार के चमार की लड़की ही है। अब वह क्या करे?

शर्मा ने ससुर से कुछ नहीं कहा। अब उसे अपनी स्त्री और उस घर से घृणा हो गई। वह उसी दिन आधी रात को ससुराल से भागा और अपने गाँव की ओर चला। सबेरा होते होते वह एक धर्मशाले के नज़दीक पहुँचा। वहाँ आते ही उसे जोरों का बुखार चढ़ आया। वह उसी धर्मशाले में रुक गया और बुखार से तड़पता हुआ एक कोने में पड़ा रहा।

उसकी स्त्री अन्नपूर्णा बहुत ही चतुर थी। वह अपने पति के मन की बात पहले ही ताड़ गई थी। उसको खूब मालूम हो गया कि पति के मन में कोई शङ्का हो गई है। इसलिए उसने तै कर लिया कि किसी न किसी उपाय से पति के मन का वह भ्रम दूर करना चाहिए।

जिस समय शर्मा ससुराल से भागा, तो अन्नपूर्णा सोई नहीं थी। वह सिर्फ़ सोने का बहाना कर लेट रही थी। इसलिए उसने चुपके से पति का पीछा किया। जैसे ही वह धर्मशाला में रुका, वह भी वहीं रुक गई।

जब उसने देखा कि शर्मा बुखार से छटपटा रहा है, तो उसने सारी रात जग कर पति की सेवा की। उसकी सेवा के प्रभाव से शर्मा थोड़े ही दिनों में चंगा हो गया। लेकिन बुखार उतर जाने के बाद भी वह अन्नपूर्णा को पहचान न सका। उसे बड़ा अचरज हुआ कि यह लड़की क्यों इस तरह दिन-रात मेरी सेवा कर रही है! थोड़े ही दिनों में उसे उस लड़की से प्रेम हो गया। अब यहाँ तक नौबत आ गई कि वह उसे देखे बिना एक पल भी नहीं रह सकता था।

जब शर्मा पूरी तरह चंगा हो गया तो एक दिन उसने उस लड़की को बुला कर कहा कि वह उसके साथ ब्याह करना चाहता है। तब उस लड़की ने पूछा—"तो क्या अभी तक आपका ब्याह नहीं हुआ है?"

"ब्याह तो मेरा हो गया है; लेकिन मैंने अपनी पत्नी को छोड़ दिया है। इसलिए मैं दूसरा ब्याह कर लेना चाहता हूँ। बोलो—तुम मुझसे ब्याह करना पसन्द करती हो?" शर्मा ने कहा।

"और कहीं आप मुझे भी छोड़ दें तो! मैं नहीं चाहती कि कोई मुझसे ब्याह करके छोड़ दे;" अन्नपूर्णा ने कहा। "मैं कसम खाता हूँ कि कभी ऐसा न होगा। जब हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं तो फिर ऐसा क्यों होगा!" शर्मा ने जवाब दिया।

दूसरे दिन उसी गाँव के मन्दिर में दोनों का फिर से ब्याह हुआ। ब्याह हो जाने के बाद अन्नपूर्णा ने शर्मा का हाथ पकड़ कर हँसते हुए कहा—"मेरा भी एक ब्याह पहले ही हो चुका है।" यह सुनते ही शर्मा के सिर पर मानों बिजली टूट पड़ी। उसने क्रोध से काँपते हुए गरज कर कहा—"तो यह बात तुमने पहले ही क्यों न बता दी! क्यों इस तरह मेरा धर्म भ्रष्ट कर दिया! तुम्हारे पहले पति का नाम क्या था!" "उनका नाम श्रीराम शर्मा था। वे देखने में ठीक आप ही जैसे थे। वे भी आपकी ही तरह अपनी स्त्री को छोड़ कर आधी रात के वक्त ससुराल से भाग निकले थे।" अन्नपूर्णा ने हँसते हुए जवाब दिया।

यह सुनते ही शर्मा ने अपनी पत्नी की तरफ़ गौर से देखा। तुरन्त वह उसे पहचान गया। पुरानी बातें याद आते ही उसका सिर शर्म से झुक गया। उसका सारा क्रोध काफ़ूर हो गया और वह सोचने लगा कि ऐसी स्त्री तो बड़े भाग्य से मिलती है।

उस दिन से शर्मा के मन में फिर कभी उस अछूत लड़की को छोड़ देने का ख्याल नहीं हुआ। सेवा से प्रेम पैदा हुआ और प्रेम ने घृणा को जीत लिया। दोनों खूब खुश रहने लगे। कभी-कभी बूढ़े ब्रह्मा और उसकी ब्रह्म-गाँठों की बात याद करके वह खूब हँसता और अन्नपूर्णा को भी यह कहानी सुनाता। फिर कहता—यह ब्रह्म-गाँठ की महिमा है।

बच्चो !

ऊपर देखो। चित्रके बीचों-बीच एक बिल्ली छिपी है। चारों ओर से चार कुत्ते उसे पकड़ने के लिए दौड़ रहे हैं। लेकिन एक ही कुत्ता उस बिल्ली को पकड़ सकता है। जरा बताओ तो देखें, वह होशियार कुत्ता कौन-सा है!

बन्दर ने बगुले को दो बार चकमा दिया। इसलिए बगुले ने सोचा कि बन्दर को भी दो बार धोखा देना चाहिए।
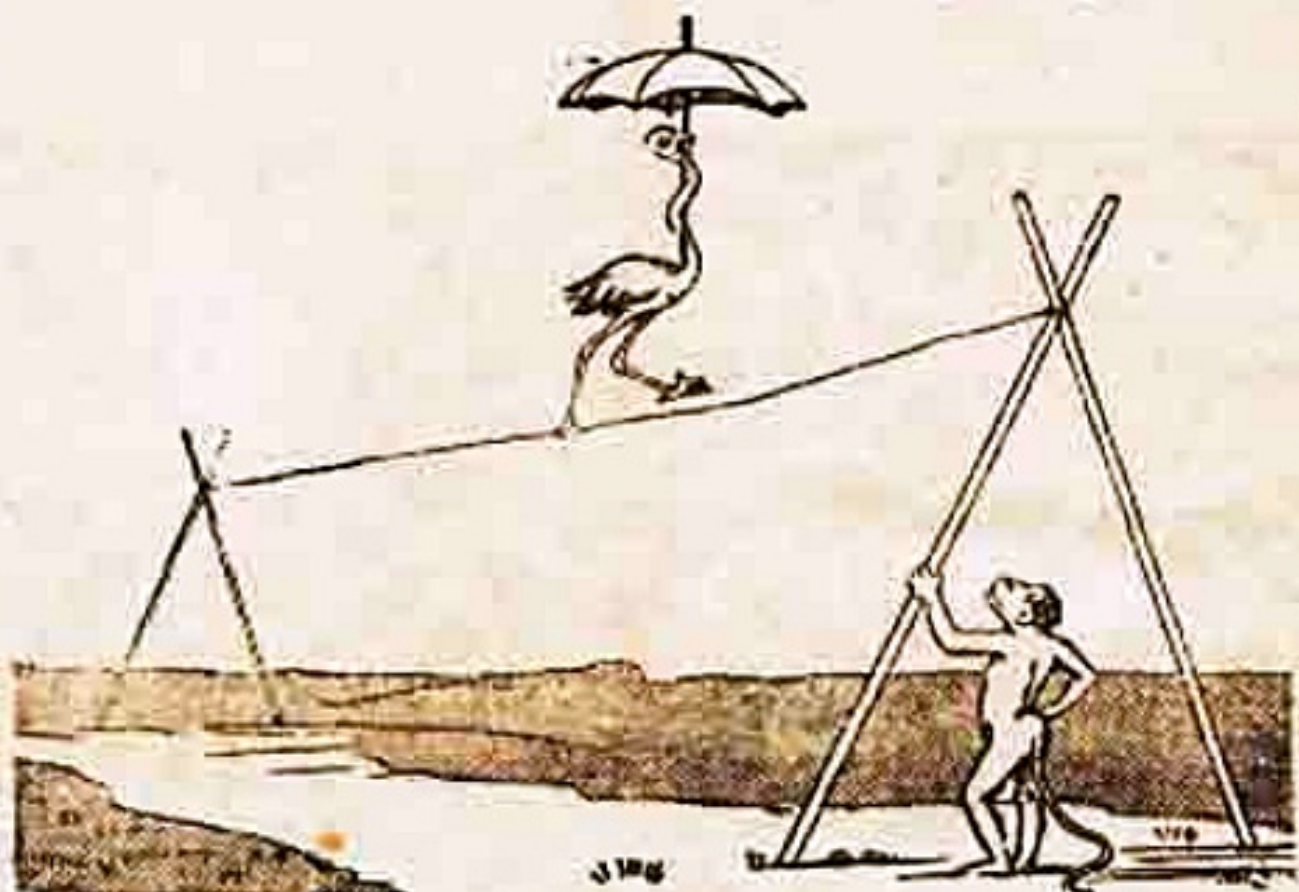
पहले बगुला अपनी गर्दन से एक छाता पकड़ कर तार पर बड़ी होशियारी से चला। फिर उसने, बन्दर से भी उसी तरह चलने को कहा।
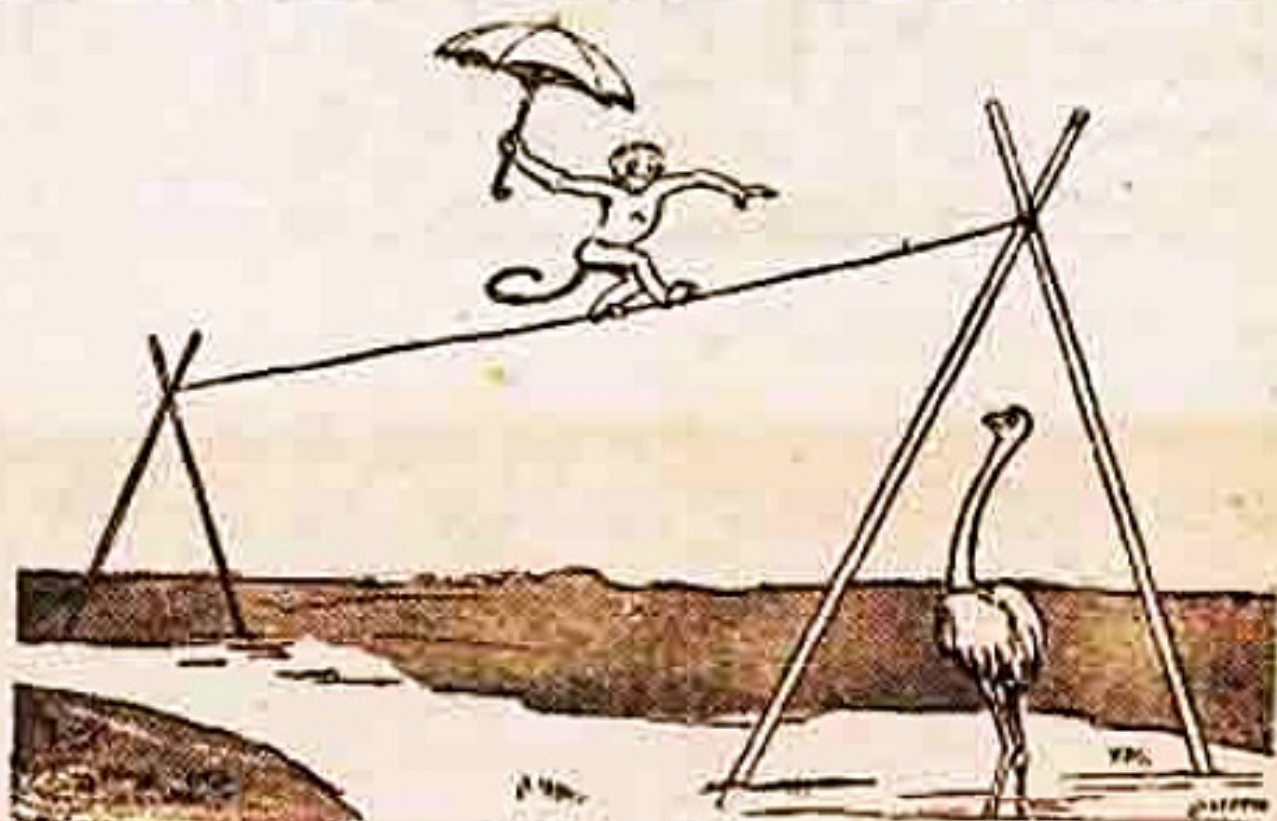
बन्दर भी छाता हाथ में लेकर बड़ी आसानी से तार पर चला।
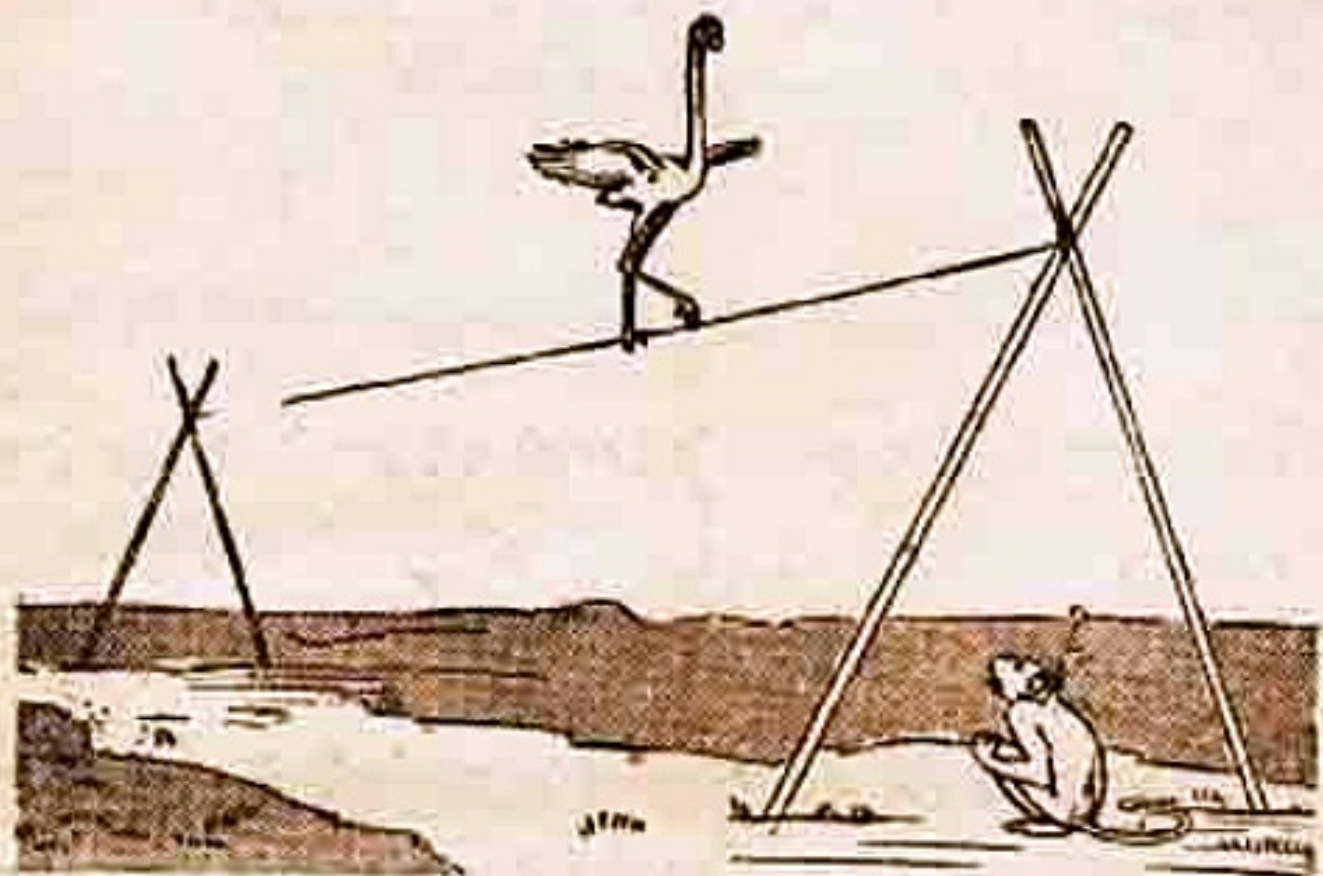
इस बार बगुले ने छाता नहीं लिया। वह अपने पंख फैला कर उनके सहारे तार पर चला।
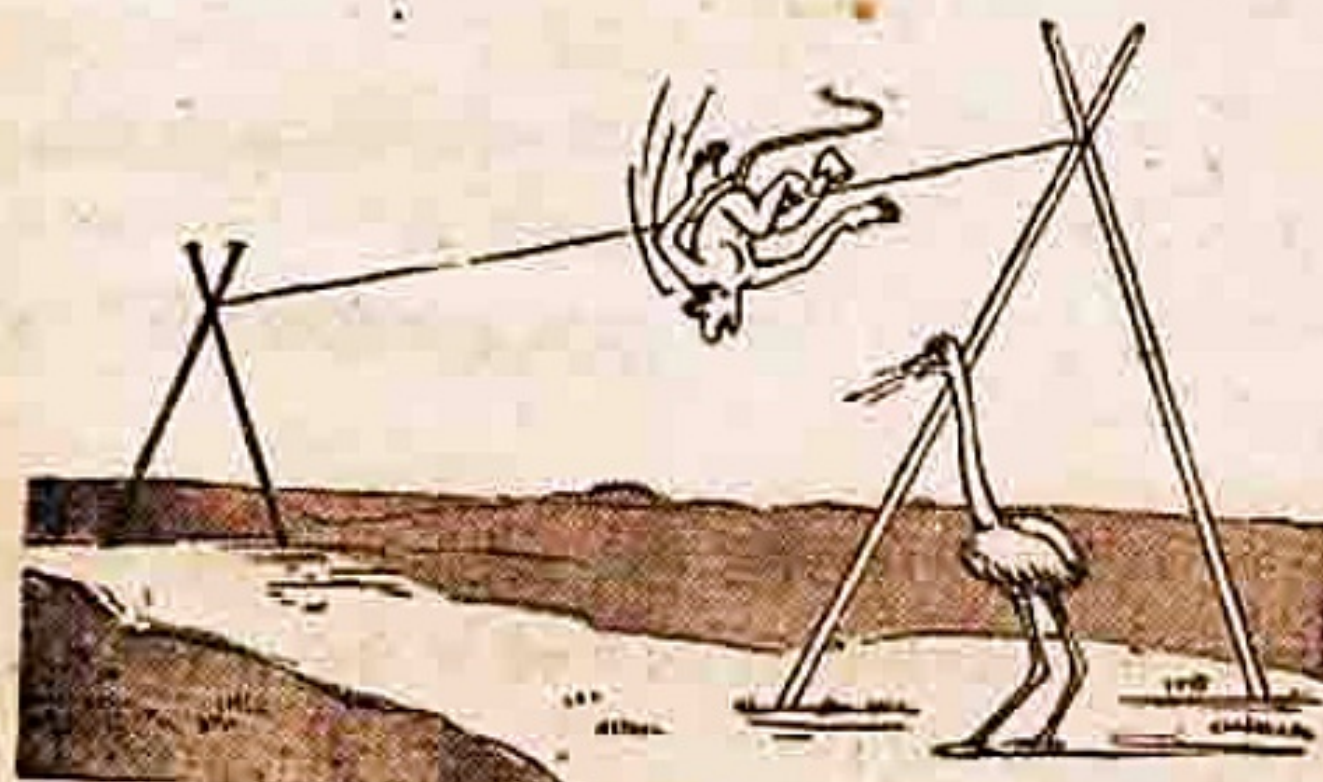
बन्दर भी बिना छाता लिए दोनों हाथ फैला कर तार पर चलने लगा।
पर बीच में ही धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। बड़ी चोट आई।

बच्चों का खेलना-कूदना सिर्फ़ मन बहलाने के लिए ही नहीं है। खेलने-कूदने से बच्चों का स्वास्थ्य बनता है। पाचन-शक्ति बढ़ती है। माँस-पेशियाँ सबल हो जाती हैं। इसके अलावा वे साथियों से हिल-मिल कर रहना सीख जाते हैं।

खेलने-कूदने की ओर बच्चों की स्वाभाविक रुचि रहती है। झूले में लेटा-लेटा दुध-मुँहा बच्चा भी हाथ-पैर पटकता है। छत की तरफ़ देखता हुआ पोपले मुँह से किल्कारियाँ भरता है। बच्चों के बढ़ने और बड़े होने में खेल-कूद से बहुत मदद मिलती है। प्रकृति खुद बच्चों को खेलना सिखाती है।

छोटे बच्चे खिलौनों से खेलते हैं। बड़े लड़के आँख-मिचौनी आदि खेलों से मन बहलाते हैं। किशोरों के लिए कबड्डी आदि अच्छे खेल हैं। हमारे देश में सैकड़ों तरह के खेल प्रचलित हैं। लेकिन आजकल फुटबाल, हाकी, क्रिकेट आदि विलायती खेलों का बाज़ार गर्म है।

बड़ों को चाहिए कि वे बच्चों को खेलने-कूदने से कभी न रोकें। क्या ही अच्छा हो अगर सरकार और स्थानिक-संस्थाएँ हर गाँव में बच्चों के खेलने-कूदने के लिए खुली जगहों और मैदानों का प्रबन्ध करें।

तुम्हारी दीदी
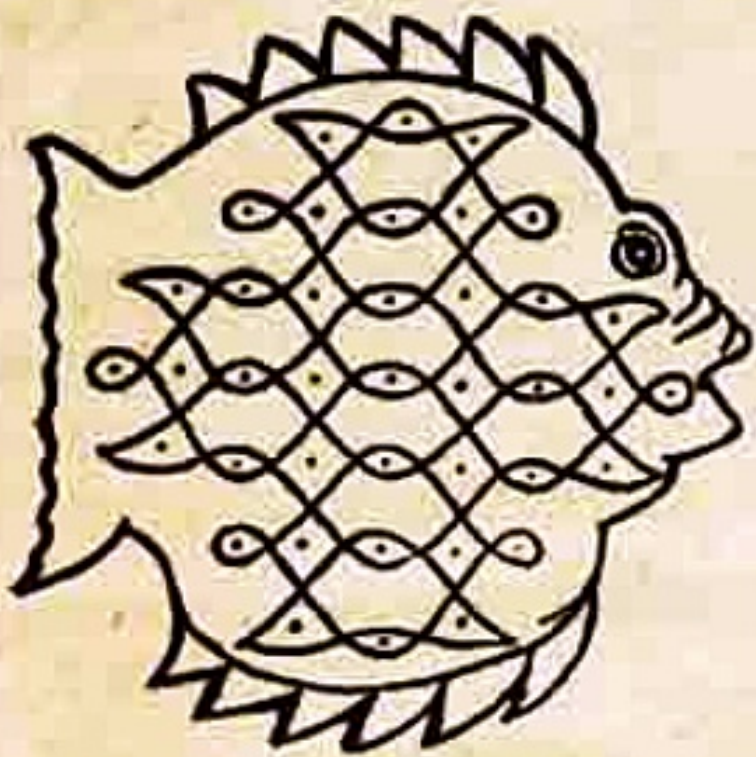
कुमारी सावित्री

जानकी
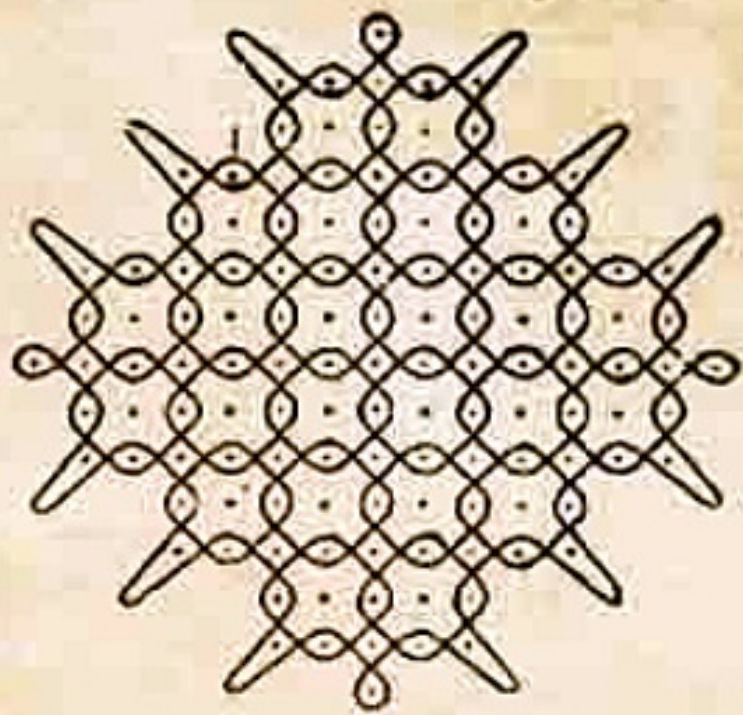
कार्तिका

गार्गेयी

नारङ्गी के फल में सिक्का दिखाना ।

पहले आधी दर्जन नारंगियाँ ले लो। उन्हें दर्शकों के सामने रख कर कहो—'यह देखिए! ये जादू की नारंगियाँ है। हरेक नारंगी में एक-एक सिक्का है। अगर आपको विश्वास न हो तो छील कर देख लीजिए!' तब कुछ लोग नारंगियाँ छील कर देखेंगे। लेकिन उनमें सिक्के कहाँ से आयें? यहीं बाजीगर को अपनी करामात दिखानी है। तुम दर्शकों में किसी से एक सिक्का माँग लो। तुम उनसे कहो—"आप अपना सिक्का अच्छी तरह से देख-भाल कर पहचान लीजिए। न हो तो, उस पर कोई चिह्न बना लीजिए।" इस तरह बातें बनाते हुए सिक्का ले लो। उसे कोट की जेब में या और कहीं रख कर गायब कर दो। अब दर्शकों से कहो कि वे कोई एक नारंगी चुन लें। चुनी हुई नारंगी लेकर अपने चाकू से दो टुकड़ों में काट लो। दोनों टुकड़ों के बीच में दर्शकों को एक सिक्का दिखाई पड़ेगा और वे चकित हो जाएँगे! (पहला चित्र देखो!)

यह तमाशा देख कर लोग दाँतों तले उँगली दबाने लगेंगे। वे सोचने लगेंगे कि इससे बढ़ कर और क्या अचरज हो सकता
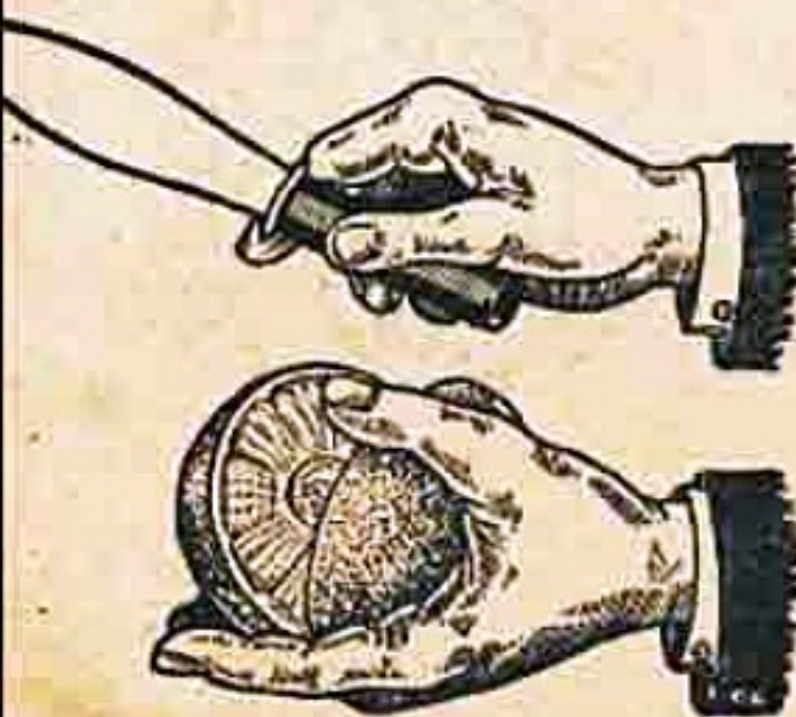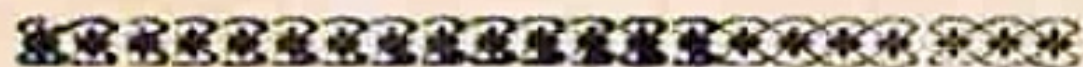
है ! लेकिन यह सबसे आसान काम है। सारा जादू तुम्हारे चाकू में है।

तुम दूसरा चित्र देखो तो सारा रहस्य तुम्हारी समझ में आ जाएगा। देखो, A एक स्प्रिङ्ग है। B दर्शक का सिक्का है और वह A नामक स्प्रिङ्ग से दबा हुआ है। C स्प्रिङ्ग का बटन है। नारंगी काटते समय चाकू की मूँठ में लगी हुआ C नामक बटन दबाओ। तुरन्त चाकू के फल से लगा हुआ सिक्का छूट कर नारंगी में आ जाएगा। लेकिन एक बात का ध्यान रखो। चाकू का वह पहलू जिसमें स्प्रिङ्ग लगा हुआ है, हमेशा अपनी ओर रखो। नहीं तो तुम्हारी पोल खुल जाएगी।

कलकत्ते में मैंने एक बार यही तमाशा किया था। मेरे मुकाम से थोड़ी ही दूर पर फलों की दूकानें थीं। मैंने एक दूकानदार से पूछा—'भई! नारंगियाँ कैसे दोगे ? एक दर्जन का भाव बताओ तो !' जब उसने बताया तो मैंने पैसे देकर नारंगियाँ ले लीं। फल लेने के बाद मैंने एक नारंगी काट कर उसे दिखाई तो उसमें एक चवन्नी थी। मैंने उससे कहा—'भई! तुमने यह तो घाटे का व्यापार किया।' इसी तरह मैंने और तीन चार नारंगियाँ काट कर उसे दिखाईं। बेचारा सन्न रह गया। उसे अपनी आँखों पर विश्वास न होता था। वह नारंगियों की ढेर में से एक-एक नारंगी निकाल कर छीलने लगा।

* * *
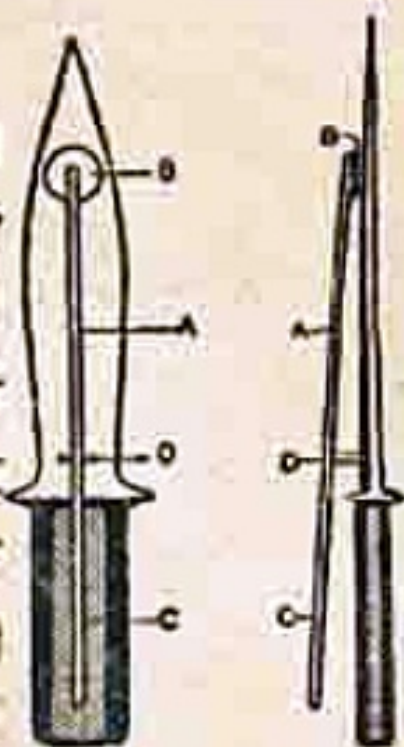
[अगर कोई इस के सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार करना चाहें तो सीधे प्रोफेसर साहब को लिखें। प्रोफेसर साहब खुद उन के सारे सन्देह दूर करेंगे। हाँ, प्रोफेसर साहब को पत्र अंग्रेजी में ही लिखा जाए। यह ध्यान में रहे। प्रोफेसर साहब का पता :—

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मेर्जीशियन

पो. बा. ७८७८ कलकत्ता १२.]

डाक्टर और मरीज़

मुन्नी ने एक कुत्ता पाला। एक दिन उस कुत्ते के पेट में दर्द होने लगा। तब मुन्नी एक डाक्टर के यहाँ जाकर दवाई ले आई।

'लो! यह दवा खा लो! पेट का दर्द दूर हो जाएगा।' उसने दवा की पुड़िया हाथ में लेकर कहा। पर सवाल उठा कि कुत्ता दवा खाएगा कैसे?

इसलिए उसने एक नली लाकर कुत्ते के मुँह में रख दी और कहा—'दवा इस नल में डाल कर मैं ज़ोर से फूँक दूँगी। तब दवा तुम्हारे गले से उतर जाएगी।'

दवा नली में डाल कर मुन्नी ने उसका दूसरा सिरा अपने मुँह में रख कर फूँकना चाहा।

लेकिन कुत्ते ने मुन्नी से भी पहले खुद फूँक दिया। बस, अब क्या था? दवा मुन्नी के गले से नीचे उतर गई।

संकेत

बाएँ से दाएँ

१. नया
३. मछली
५. स्त्री सम्बंधी
७. एक संख्या
९. रुपये
११. भगवान का चिह्न
१२. जो नहीं मरता।
१४. साल
१६. बड़ी चारपाई
१७. नदियों में स्नान करने की जगह
१८. बुरी आदत

ऊपर से नीचे

२. कारण
२. शिखर
४. प्रान्त
६. दुख
८. दयालु
१०. कमी
११. भगवान का चिह्न
१२. माने
१३. 'रिपोर्ट'
१४. काँख
१५. ठीक

	1	2		3		
4		5				6
7	8	ह		9 र	10	
			11			
12		13 र		14 ब		15
		16				
	17			18		
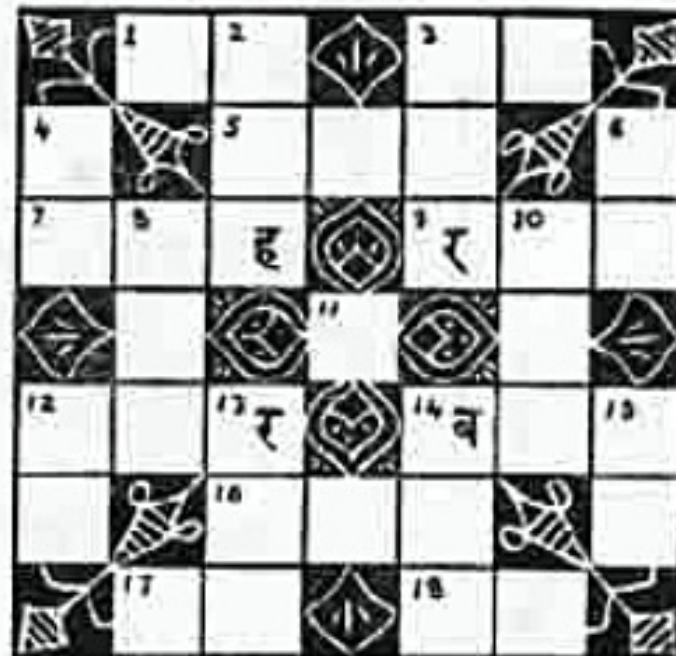
यह चित्र देखिए! चित्र में मुर्गा जब बाँग देता है तो नारियल का पेड़ नीचे झुक जाता है और उस पर होकर नाई नदी पार करता है। नदी के पार राजा का क़िला है। नाई क़िले में जाकर राजा की हजामत बनाता है। जब-जब नाई का मन चाहता है तो वह नदी पार किया करता है। याने नाई के इच्छानुसार मुर्गा बाँग दिया करता है। बताइए यह कैसे हो सकता है? न बता सकें तो ५६ वाँ पृष्ठ देखिए।

इस चित्र में एक से लेकर इक्कीस तक अङ्क हैं। अगर आप उन सब अङ्कों को पेन्सिल की लकीर से मिला दीजिए तो छिपा हुआ चोर पकड़ा जाएगा।

विनोद-वर्ग

★

नीचे दिए हुए संकेतों से पूर्ति करो। अगर न कर सको तो ५६ वाँ पृष्ठ देखो।

१	म	न			
२		म	न		
३			म	न	
४				म	न

१. मन को लुभाने वाला

२. श्रीरामचन्द्रजी का जन्म दिन

३. अनमना

४. स्वागत
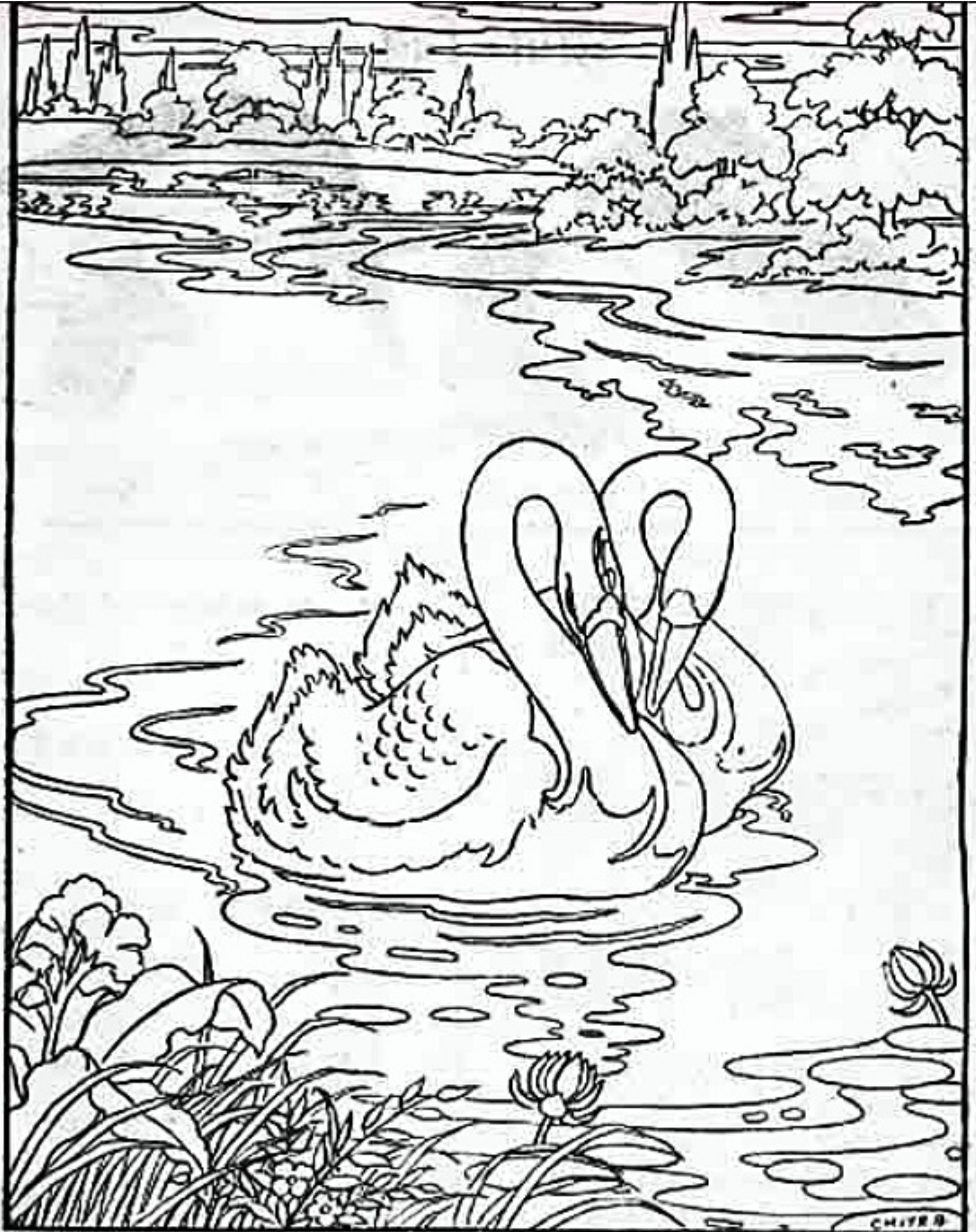
पिछली बार तुम ने हिरनी को रंग लिया होगा। इस बार सोचो कि हंसों को किन रंगों से रंगना चाहिए। इस तस्वीर को रंग कर अपने पास रख लेना और अगले महीने के चन्दामामा के पिछले कवर पर के चित्र से उसका मिलान करके देख लेना।

छाया-चित्र

ऊँट　　हबशी बालक का शिर　　हाथी　　सियार

पहेली का उत्तर

	[1]न	[2]व		[3]मी	न	
[4]सु		[5]ज	ना	ना		[6]ग
[7]वा	[8]र	ह		[9]र	[10]क	म
	ही		[11]ॐ		स	
[12]अ	म	[13]र		[14]व	र	[15]स
र्थ		[16]प	लं	ग		ही
	[17]घा	ट		[18]ल	त	

मुर्गे वाली पहेली का जवाब :

भाई जब मुर्गों से बाँग दिलाना चाहता है तो अपनी झोली से आइना निकाल कर उसके सामने कर देता है। आइने में अपनी परछाँई देख कर मुर्गा उसे एक दूसरा मुर्गा समझकर बाँग देने लगता है।

८-वें पृष्ठ की चिड़ियों वाली पहेली का जवाब :

दूसरी और आठवीं चिड़ियाँ एकसी हैं।

*

विनोद वर्ग का जवाब

म	न	मो	ह	क
प	म	न	व	मी
अ	न्य	म	न	स्क
शु	भा	ग	म	न

कामचोर विद्यार्थिनी !